सांध्य दैनिक

4PM

जिद...सच की

www.4pm.co.in | www.facebook.com/4pmnewsnetwork | @Editor_SanjayS | YouTube @4pm NEWS NETWORK

● वर्षः 12 ● अंक 226 पृष्ठः 8 ● लखनऊ, गुरुवार 24 सितम्बर, 2026

मूल्य ₹ 3/-

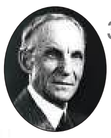

अगर हर कोई साथ में आगे बढ़ रहा है तो सफलता खुद अपना ख्याल रख लेती है।
–हेनरी फोर्ड

वनडे सीरीज में रोहित-कोहली के निशाने... 7 | बनने लगा उत्तर प्रदेश में चुनावी... 3 | सपा की रथयात्रा शुरू, विस चुनाव... 2

डिजिटल दुनिया में 4PM का डंका, लगातार 4 वर्षों से शीर्ष पर

संजय शर्मा ने बता दिया संपादक सिर्फ चैनल नहीं बनाता इतिहास भी बनाता है

» डाटा बीइंग की रिपोर्ट में नंबर वन 4PM 30.34 करोड़ व्यूज, 15 फीसदी मार्केट शेयर और लगातार चौथे साल शीर्ष पर

4पीएम न्यूज नेटवर्क

लखनऊ। बुलंदियों पर पहुंचना कोई कमाल नहीं, बुलंदियों पर ठहरना कमाल होता है। जी हां बड़े दिग्गजों को पीछे छोड़कर चार वर्षों से लगातार टॉप पोजिशन बरकरार रखने के कमाल को 4PM न्यूज चैनल ने इस माह भी हासिल किया है। डाटा बीइंग की ताजा रिपोर्ट के मुताबिक 4PM 30.34 करोड़ व्यूज, 15 फीसदी मार्केट शेयर के साथ चोटी पर बना हुआ है। ऐसा पहली बार नहीं हुआ है। यह कोई अचानक आया डिजिटल तूफान नहीं है।

पिछले चार वर्षों से 4PM लगातार देश के प्रमुख राजनीतिक कमेंट्री प्लेटफॉर्मों में शीर्ष पर बना हुआ है। 4PM ने यह सब हासिल किया है जिसकी अपने सुधि पाठकों और संपादक संजय शर्मा की बेबाक पत्रकारिता शैली के बल पर। 4PM के जन्म से लेकर अभी तक शायद ही ऐसा कोई दिन आया हो जिस दिन संघर्ष का बिगुल न बजा हो। दिल्ली में शाहीन/नफीसा की बेबाक पत्रकारिता हो या फिर एसआईआर और दूसरे राजनीतिक मुद्दे। 4PM कभी भी खबर कहने से पीछे नहीं हटा चूका नहीं। डंके की चोट पर हमने दर्शकों की आवाज को शासन सत्ता में बैठे लोगों तक पहुंचाया है और आगे भी पहुंचाते रहेंगे। इस मुकाम को हासिल करने में 4PM के संपादक संजय शर्मा ने खून-पसीना एक किया है और बहुत से जुल्मों सितम झेले हैं।

शब्द-शब्द संघर्ष जिद सच की

संजय शर्मा ने कभी पत्रकारिता को केवल नौकरी की तरह नहीं देखा उनके लिए यह शब्दों की, सवालों की सच को सामने रखने की लड़ाई है। शायद इसी वजह से 4PM के साथ जुड़ा वाक्य शब्द शब्द संघर्ष जिद सच की सिर्फ टैगलाइन नहीं रह जाता। आंकड़े जब बार बार सामने आते हैं तो वह एक संपादकीय यात्रा का परिचय बन जाता है। और इस कहानी का एक और अध्याय है 4PM यूपी। डाटा बीइंग की उसी सूची में 4PM यूपी ने भी देश के टॉप 30 राजनीतिक यूट्यूब चैनलों में जगह बनाई है। 19.2 मिलियन व्यूज के साथ 4PM यूपी की मौजूदगी बताती है कि कहानी सिर्फ राष्ट्रीय डिजिटल मंच तक सीमित नहीं है यानी दिल्ली से लेकर लखनऊ तक 4PM का जलवा कायम है।

एक पत्रकार के लिए इससे बड़ी उपलब्धि क्या होगी

एक पत्रकार के लिए इससे बड़ी उपलब्धि और क्या होगी कि जिस सवाल को वह अपने न्यूजरूम की मेज पर बैठकर उठाता है वही सवाल लाखों लोग अपनी मोबाइल स्क्रीन पर देख रहे हों। 4PM के संपादक संजय शर्मा के लिए यह सिर्फ व्यूज का आंकड़ा नहीं है यह उस प्रयोग की सफलता है जिसे उन्होंने बरसों पहले शुरू किया था। आज 4PM के पूरे नेटवर्क पर प्रतिदिन करीब सवा करोड़ व्यूज आने को वह कभी सपना बताते थे आज वही सपना आंकड़ों की शक्ल में सामने खड़ा है और शायद संपादक के जीवन की सबसे खूबसूरत उपलब्धि भी यही होती है कि जिस चीज को दुनिया कभी सपना समझती है एक दिन वही उसकी पहचान बन जाती है।

पिछले चार वर्षों से 4PM नम्बर वन की पोजिशन पर

Top Political Commentators on YouTube – Views Market Share (August 2026) databeings

Excl. mainstream media. View Count as of 22th September 2026 for August Uploaded videos only

Rank	Channel	#Views (Million)	Views Share
1	4PM	303.4	15%
2	NMF News	291.5	15%
3	Ajit Anjum	140.1	7%
4	DB live	131.3	7%
5	Abhisar Sharma	109.9	6%
6	online news india	84.1	4%
7	The Live Tv	69.8	4%
8	Dhruv Rathee	67.3	3%
9	Ulta Chasma uc	57.6	3%
10	CAPITAL TV	48.2	2%
11	The Jaipur Dialogues	48.1	2%
12	Ravish Kumar Official	45.1	2%
13	Deepak Sharma	44.9	2%
14	THE CHANAKYA DIALOGUES HINDI	43.2	2%
15	Public Meter	41.7	2%
16	The Credible History	40.6	2%
17	Bharat Samachar	38.6	2%
18	The Deshbhakt (Akash Banerjee)	35.8	2%
19	The Public India	34.0	2%
20	Jai Maharashtra News	33.8	2%
21	Satya Hindi	33.6	2%
22	National Dastak	33.2	2%
23	The Rajneeti	31.9	2%
24	Harish Burnwal	30.9	2%
25	Apka Akhbar	29.1	1%
26	Headlines India	28.2	1%
27	DNAIndiaNews	27.8	1%
28	Pyara Hindustan	25.4	1%
29	Punya Prasun Bajpai	25.0	1%
30	4PM UP	19.2	1%

contact@thedatabeings.com thedatabeings.com @DataBeings

4PM के साथ लगातार दर्शकों का भरोसा कायम है

डाटा बीइंग की सूची में 4PM के पीछे एनएमएफ न्यूज, अजीत अंजुम, डीबी लाइव, अभिसार शर्मा और दूसरे बड़े डिजिटल नाम मौजूद हैं। लेकिन अगस्त की इस रैंकिंग में 4पीएम सबसे ऊपर है 303.4 मिलियन 15 फीसदी स्क्रीन शेयर के साथ नंबर वन आंकड़े छोटे होते हैं लेकिन उनके पीछे की यात्रा बहुत लंबी होती है और इस यात्रा में सबसे बड़ी बात यह है कि 4पीएम की कहानी किसी एक वीडियो की कहानी नहीं है। यह लगातार काम करते रहने की कहानी है लगातार सवाल पूछने की कहानी है और लगातार दर्शक का भरोसा बनाए रखने की कहानी है।

क्या-क्या न सहे जुल्मों-सितम सच की आवाज बनने के लिए

किसी चैनल का नंबर वन होना सिर्फ व्यूज का खेल नहीं होता उसके पीछे वह संघर्ष छिपा होता है जिसकी कीमत कैमरे के सामने नहीं कैमरे के पीछे चुकानी पड़ती है। 4PM और उसके संपादक संजय शर्मा की कहानी में भी यह संघर्ष एक लंबे दौर से दिखाई दे रहा है। 4PM पर सरकारी दबाव और दूसरी दमानत्मक कार्रवाई की लंबी फेहरिस्त है। भारत में 4PM चैनल को ब्लॉक किया जाना। कोर्ट के आदेश के बाद खुलना और फिर ब्लाक कर देने के बाद दोबारा खुलाना। यही नहीं विज्ञापन और दूसरे संसाधनों से दूर रखना गलत कार्रवाईया आदि शामिल है। संजय शर्मा के लिए यह रास्ता आसान नहीं रहा। लेकिन उन्होंने कभी भी हार नहीं मानी। संघर्ष किया और सवाल पूछने की जिद से पीछे नहीं हटे यही कारण है कि जब डाटा बीइंग की अगस्त 2026 की रैंकिंग में 4PM 30.34 करोड़ से अधिक व्यूज और 15 प्रतिशत व्यू-शेयर के साथ शीर्ष पर दिखाई देता है तो इस आंकड़े के पीछे सिर्फ एल्गोरिद्म नहीं एक लंबा संघर्ष भी पढ़ा जा सकता है। सवाल पूछने की कीमत चुकानी पड़े रास्ते में रुकावटें आएं प्लेटफॉर्म पर कार्रवाई हो फिर भी आवाज जारी रहे यही 4PM की कहानी है और यही संजय शर्मा के संघर्ष की कहानी है। इसीलिए आज की बल्ले-बल्ले के पीछे कल के वह दिन भी याद रखने होंगे जब आवाज को रोकने की कोशिशें हुईं मगर आवाज ने रास्ता बदलकर भी अपनी जगह बना ली।

सपा की रथयात्रा शुरू, विस चुनाव-27 के लिए फूंका चुनावी बिगुल, रायबरेली में उमड़ा जनसमूह

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

रायबरेली। समाजवादी पार्टी ने यूपी चुनाव 2027 के लिए चुनावी बिगुल बजा दिया है। बृहस्पतिवार को समाजवादी रथ रायबरेली पहुंचा। जहां पर सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव कई कार्यक्रमों में शामिल हुए। सपा प्रमुख ने इस दौरान भाजपा सरकार पर जमकर निशाना साधा। वहीं, उनके रायबरेली पहुंचने से पहले ही पोस्टर वॉर शुरू हो गया है।

सपा मुखिया अखिलेश यादव की रथ यात्रा को लेकर सियासी हलचल तेज कर दी है। लखनऊ में अखिलेश के खिलाफ होर्डिंग्स लगाई गईं। सिकंदराबाद चौराहे पर लगाई गई होर्डिंग में गिरिगिटेश लिखा गया। उसी अनुरूप चित्र भी बनाया गया। समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ताओं ने देखा तो इसे फाड़कर विरोध जताया।

इसके पहले, रायबरेली की ओर जा रहे अखिलेश यादव का मोहनलालगंज में जोरदार स्वागत हुआ। वह कुछ देर के लिए मोहनलालगंज में रुके। कार्यकर्ताओं ने फूल-माला पहनाकर उनका जोरदार स्वागत किया। इस दौरान कार्यकर्ताओं ने नारेबाजी कर उनका स्वागत किया। अखिलेश यादव ने भी कार्यकर्ताओं से मुलाकात कर उनका अभिवादन स्वीकार किया। इसके बाद रायबरेली के लिए रवाना हो गए।

बछरावां में पीडीए रथ पर सवार हुए पूर्व सीएम

सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव बछरावां में पीडीए रथ पर सवार हुए और कार्यकर्ताओं का अभिवादन किया। कहा जा रहा है कि इसके साथ ही सपा ने मिशन यूपी में फतेह के लिए शुरुआत कर दी।

पोस्टर वार में हमले

बृहस्पतिवार को अखिलेश यादव के रायबरेली पहुंचने से पहले शहर में पोस्टर वार तेज हो गया है। शहर के विभिन्न स्थानों पर कई पोस्टर लगाए गए हैं। इन पोस्टरों के माध्यम से राजनीतिक संदेश दिए जा रहे हैं। एक पोस्टर में लाल टोपी, साइकिल... यही है गुंडों की पहचान लिखा गया है। यह पोस्टर समाजवादी पार्टी और उसके समर्थकों को निशाना बनाता है। वहीं, दूसरे पोस्टर में योगी राज में कानून से गुंडई नहीं चलेगी का संदेश दिया गया है। यह पोस्टर वर्तमान सरकार की कानून व्यवस्था के पक्ष में है। अखिलेश यादव के आगमन से पूर्व यह पोस्टरबाजी राजनीतिक सरगर्मी बढ़ा रही है। स्थानीय प्रशासन इस स्थिति पर नजर बनाए हुए है।

सीईसी ज्ञानेश कुमार की देखरेख में न हो विस चुनाव : अखिलेश

सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा कि यूपी का अगला विधानसभा चुनाव ज्ञानेश कुमार के अंडर (देखरेख) में नहीं होना चाहिए। उन्होंने आरोप लगाया कि चुनाव आयोग कठपुतली की तरह काम कर रहा है। चुनावों में बेईमानी हो रही है। आयोग निष्पक्ष नहीं रह गया है। उन्होंने कहा कि आयोग लोकतंत्र को खत्म करने के षड्यंत्र में शामिल है। भविष्य के चुनाव भी इनके नेतृत्व में नहीं होने चाहिए। उन्होंने कहा कि मीडिया खबरों के अनुसार, चुनाव आयोग के दो चुनाव आयुक्तों ने मुख्य चुनाव आयुक्त (सीईसी) के गलत फैसलों के खिलाफ दस महीनों में 14 बार नोट लिखकर अपनी शिकायत और आपत्ति दर्ज कराई है। यह बेहद गंभीर है कि मुख्य चुनाव आयुक्त के फैसलों के खिलाफ अन्य चुनाव आयुक्तों ने गंभीर आपत्तियां दर्ज कराई है। अखिलेश ने कहा कि इसका मतलब है कि चुनाव आयोग अपना काम निष्पक्ष तरीके से नहीं कर रहे हैं। यह बेहद घातक है। भाजपा सरकार में संस्थाएं निष्पक्ष नहीं रह गई हैं। लोकतंत्र में कठपुतली बनकर धोखा देना घोर सांविधानिक अपराध है। उन्होंने कहा कि 2022 के यूपी विधानसभा चुनाव के परिणाम के बाद समाजवादी पार्टी ने आरोप लगाया था कि चुनाव आयोग के अधिकारियों ने जानबूझ कर सपा समर्थक मतदाताओं को चिह्नित कर वोटर लिस्ट से हटा दिया है। उपचुनाव में वोटों की लूट हुई, लेकिन आयोग ने तब भी कोई कार्रवाई नहीं की। पश्चिम बंगाल में तीन लाख केंद्रीय फोर्स लगाकर चुनाव लूट लिया। ये लोग यूपी में फिर बड़े पैमाने पर बेइमानी की तैयारी कर रहे होंगे। हम लोगों ने इन्हें एसआईआर में बेईमानी करते पकड़ा था। जो अधिकारी आने वाले समय में विधानसभा का चुनाव देखेंगे उनके एक भी पीडीए वर्ग से नहीं हैं। यह बड़ी साजिश और षडयंत्र हैं।

अखिलेश के रथ पर 'विजय भव' की जगह लिखेगा 'विनाश भव' : राजभर

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव की रायबरेली से शुरू हुई पीडीए रथयात्रा को लेकर प्रदेश सरकार के मंत्री ओमप्रकाश राजभर ने बृहस्पतिवार को अकबरपुर स्थित सर्किट हाउस में तीखी टिप्पणी की। अखिलेश यादव के '27 विजय भव' पोस्टर पर निशाना साधते हुए राजभर ने कहा कि कुछ दिन बाद इसी रथ पर 'विजय भव' की जगह 'विनाश भव' लिखा जाएगा। ओमप्रकाश राजभर ने कहा कि अखिलेश यादव रायबरेली में सपा नेताओं और कार्यकर्ताओं का मनोबल बढ़ाने जा रहे हैं। सपा नेताओं और पुलिस अधिकारी के बीच हुए विवाद का हवाला देते हुए अखिलेश के रायबरेली दौरे पर सवाल उठाए। अखिलेश यादव के रथ पर '27 विजय भव' पोस्टर में हनुमान जी के चित्र को लेकर भी राजभर ने तंज कसा। उन्होंने कहा कि हनुमान भगवान राम के भक्त हैं और अखिलेश यादव अब तक अयोध्या भगवान राम के दर्शन करने नहीं गए हैं। राम के दर्शन किए बिना हनुमान का आशीर्वाद कैसे मिलेगा। राजभर ने शिवपाल यादव पर सपा सांसद रमाशंकर राजभर (सलेमपुर) और राम भुआल निषाद (सुल्तानपुर) के मंच से नीचे बैठने पर भी निशाना साधा।

चुनाव आयोग की चोरी का खुलासा नेता प्रतिपक्ष ने पहले ही कर दिया था : राय

प्रदेश अध्यक्ष बोले- रिपोर्ट ने उसकी एक बार फिर पुष्टि कर दी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। यूपी कांग्रेस के अध्यक्ष अजय राय पूर्व मंत्री ने भारतीय चुनाव आयोग पर करारा हमला बोला। उन्होंने कहा कि दो चुनाव आयुक्तों द्वारा एक प्रतिष्ठित अंग्रेजी समाचार पत्र में इस बात का खुलासा किया है कि पिछले 10 महीनों में आयोग के फैसलों पर 14 आपत्तियां लिखित रूप से दर्ज कराया गया।

उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी बहुत पहले से ही सिस्टम पर सरकार द्वारा कब्जा करने की बात कही जा चुका है जिसका खुलासा हो गया है इसके साथ ही भारतीय जनता पार्टी और चुनाव आयोग की मिलीभगत से लोकतंत्र की हत्या किए जाने का जो आरोप लगाया जाता रहा है उसकी एक बार फिर पुष्टि हो गयी है।

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा कि चुनाव आयोग स्वतंत्र एवं संवैधानिक संस्था है, किन्तु जिस प्रकार मुख्य चुनाव आयुक्त द्वारा चुनाव आयोग के अन्य चुनाव आयुक्तों को दरकिनार कर सरकार के दबाव में लोकतंत्र का गला घोंटने का काम किया गया है यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण और संविधान विरोधी है ।प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा कि उच्चतम न्यायालय ने बकायदा नियम दिया है कि चुनाव आयोग द्वारा आयोग के बहुमत द्वारा निर्णय लिया जाएगा किन्तु एक व्यक्ति का निर्णय नहीं मान्य होगा।

सरकार के दबाव में चुनाव आयोग काम कर रहा

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा कि अब यह पूरी तरह साबित हो गया कि सरकार के दबाव में अभी तक तानाशाही तरीके से चुनाव आयोग काम कर रहा था। उन्होंने कहा कि मेरी पुरजोर मांग है कि पिछले लोकसभा चुनाव 2024 के सम्पन्न हुए वाराणसी चुनाव के सम्पूर्ण नतीजे की जांच करायी जाए।

बरेलवी धर्मगुरु के अध्यक्ष से मिले प्रदेश अध्यक्ष

बरेली के सौदागरान स्थित सुन्नी बरेलवी धर्मगुरु एवं इत्तेहाद-ए-मिल्लत काउंसिल के अध्यक्ष मौलाना तौकीर रज़ा खान साहब के आवास पर पहुँचकर उनके परिजनों से मुलाकात की और उनका हालचाल जाना। उत्तर प्रदेश की भाजपा सरकार और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी से सीधा सवाल है क्या कानून का राज केवल कमजोरों और विरोध की आवाज़ उठाने वालों के लिए है सत्ता के अहंकार में लोकतंत्र की आवाज़ को दबाने और असहमति को कुचलने की कोशिश लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए गंभीर चिंता का विषय है। सरकार को यह समझना होगा कि जेल, मुकदमे और दबाव से जनता की आवाज़ नहीं दबाई जा सकती। भाजपा सरकार को जवाब देना होगा कि कानून सबके लिए बराबर क्यों नहीं दिखाई देता? उत्तर प्रदेश की जनता न्याय चाहती है, डर और दबाव की राजनीति नहीं। कांग्रेस अन्याय और भेदभाव के खिलाफ हर मंच पर मजबूती से आवाज़ उठाती रहेगी।

मोहन सरकार पर भड़के जीतू पटवारी

» बाघों के कॉरिडोर के पास कोयला खदान को मंजूरी पर कांग्रेस नाराज

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

भोपाल। बांधवगढ़ से अचानकमार तक फैले बाघों के महत्वपूर्ण प्राकृतिक गलियारे के आसपास कोयला खनन परियोजनाओं को मिल रही मंजूरियों को लेकर मध्यप्रदेश में सियासत गरमा गई है। उमरिया जिले में प्रस्तावित वेस्ट ऑफ शहडोल (साउथ) अंडरग्राउंड कोल माइन को लेकर कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट कर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की सरकार से कई सवाल पूछे हैं।

पटवारी ने बांधवगढ़-अचानकमार कॉरिडोर को बाघों की आवाजाही और जैव-विविधता के लिए महत्वपूर्ण बताते हुए कहा कि ऐसे प्राकृतिक गलियारों को सुरक्षित रखना बाघों की दीर्घकालिक आबादी और आनुवंशिक विविधता के लिए जरूरी है। उन्होंने सवाल उठाया कि जब यह क्षेत्र वन्यजीवों की आवाजाही के लिए महत्वपूर्ण है, तो इसके आसपास खनन परियोजनाओं को लगातार मंजूरी कैसे मिल रही है। कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष ने दावा किया कि पिछले चार महीनों में कॉरिडोर के आसपास चार कोयला खनन परियोजनाओं को मंजूरी मिली है। उपलब्ध रिपोर्टों के मुताबिक, जुलाई 2026 के बाद इस क्षेत्र के आसपास चार परियोजनाओं को पर्यावरणीय मंजूरी की दिशा में महत्वपूर्ण स्वीकृति मिली है। इनमें पाथोरा ईस्ट करीब 1.5 किलोमीटर, मरवाटोला VII महज 53 मीटर, अर्जुनी वेस्ट करीब 3.9 किलोमीटर और अब वेस्ट ऑफ शहडोल (साउथ) करीब 6 किलोमीटर दूरी पर बताई गई है।

1400 हेक्टेयर से ज्यादा का खनन पट्टा

वेस्ट ऑफ शहडोल (साउथ) अंडरग्राउंड कोल माइन परियोजना का खनन पट्टा क्षेत्र 1400 हेक्टेयर से अधिक बताया गया है। इसमें 960 हेक्टेयर से ज्यादा वनभूमि शामिल है। विशेषज्ञ मूल्यांकन समिति की 8 और 9 सितंबर की बैठकों में परियोजना को आवश्यक शर्तों और दस्तावेजों की पूर्ति के आधार पर पर्यावरणीय मंजूरी की सिफारिश की गई।

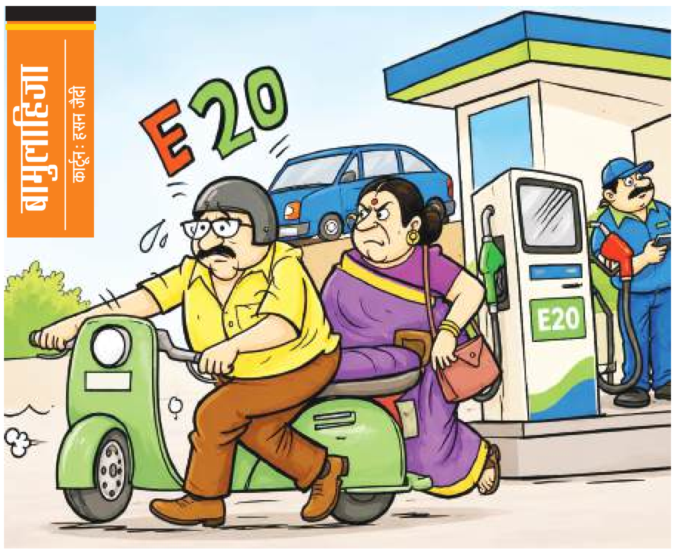

विद्यार्थियों ने किया प्रतिभा का प्रदर्शन

» विद्यार्थी तनावमुक्त शिक्षा के साथ सफल जीवन का लक्ष्य बनायें : पंकज तिवारी

» सिटी पब्लिक हाई स्कूल, 60 फिट रोड, जानकीपुरम के विद्यार्थियों ने नृत्य, गायन, संगीत, स्पीच इत्यादि में दिखाया अपना टैलेंट

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। जनविकास महासभा एवं सोक्ट द्वारा संयुक्त रूप से चलाए जा रहे विद्यार्थी प्रतिभा उत्सव कार्यक्रम के अंतर्गत आज सिटी पब्लिक हाई स्कूल, 60 फिट रोड, जानकीपुरम में विद्यार्थियों द्वारा नृत्य, गायन, संगीत, स्पीच इत्यादि प्रतिभा का प्रदर्शन किया गया।

इस अवसर पर उन्हें प्रतिभा के प्रदर्शन के प्रति प्रोत्साहित करते हुये तनाव मुक्त शिक्षा और सफल जीवन के बारे में बताया गया। इस मौके पर जनविकास महासभा के अध्यक्ष पंकज तिवारी, महामंत्री व परी पुस्तक केंद्र के प्रमुख अजय यादव, स्कूल संस्थापक प्रबन्धक आशा गुप्ता, प्रधानाचार्या दीप्ति गुप्ता, उप प्रधानाचार्या वैशाली सिन्हा, कोआर्डिनेटर अंकिता पाण्डेय, अध्यापिकाओं में महक तिवारी, दीपिका मिश्रा व साधना यादव आदि प्रमुख लोग मौजूद थे। इससे पहले कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए पंकज तिवारी ने विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज के विद्यार्थी कल के राष्ट्र निर्माता होंगे, अतः विद्यार्थियों को अपने परिवार, समाज और राष्ट्र की जिम्मेदारियां के प्रति जागरूक रहते हुए अपने स्वास्थ्य, पर्यावरण एवं जल संरक्षण तथा नशा मुक्त समाज की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी।

अतः उन्हें तनाव मुक्त शिक्षा एवं सफल जीवन जीने के लक्ष्य को लेकर आगे बढ़ना होगा इसके लिए उन्हें अपनी प्रतिभा के प्रति भी जागरूक होना होगा क्योंकि जो विद्यार्थी अपने टैलेंट के अनुरूप अपना करियर का चुनाव करते हैं उनके जीवन में सफल होने का प्रतिशत ज्यादा होता है।

बनने लगा उत्तर प्रदेश में चुनावी माहौल

रणनीति पर चुनाव लड़ते दिखेंगे सपा और भाजपा

» पीडीए की काट निकालने की कवायद

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ । उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव 2027 की तैयारी के बीच भाजपा ने समाजवादी पार्टी के खिलाफ चुनावी नैरेटिव को धार देने की रणनीति पर काम तेज कर दिया है। पार्टी अब केवल अपनी सरकार की उपलब्धियां गिनाने के बजाय सपा सरकार के कार्यकाल से सीधी तुलना करने की तैयारी में है। कानून-व्यवस्था, माफिया और संगठित अपराध से लेकर बिजली, महिला सुरक्षा और गरीब कल्याण तक के मुद्दों पर तब और अब का आंकड़ा जनता के सामने रखने की योजना है। सूत्रों के मुताबिक भाजपा के चुनावी रणनीति में खासतौर से निशाने पर सपा सरकार का 2012 से 2017 तक का कार्यकाल रहेगा। इस अवधि में दर्ज अपराध, दंगे, हत्या, लूट, डकैती, रंगदारी और संगठित अपराध से जुड़े आंकड़ों को 2017 के बाद की स्थिति से जोड़कर पेश करने की भी कोशिश होगी।

भाजपा अपने चुनावी रणनीति में सपा को घेरने के लिए माफिया के खिलाफ कार्रवाई सबसे आक्रामक मुद्दों में शामिल तो करेगी ही, साथ ही गैंगस्टर एक्ट के तहत कार्रवाई, संपत्ति कुर्की और संगठित अपराध के खिलाफ पुलिस अभियान की तुलना भी सपा शासनकाल की कानून-व्यवस्था से करते हुए आंकड़े जनता के बीच रखेगी।सूत्रों के मुताबिक भाजपा की रणनीति में मुलायम सिंह यादव के शुरुआती कार्यकाल से लेकर अखिलेश यादव सरकार तक के दौर को निशाने पर रखा जाएगा। सपा के शासनाकाल में कानून-व्यवस्था को लेकर जनता के बीच कैसी धारणा थी और अपराध, लूट, डकैती, रंगदारी, गैंगवार तथा संगठित अपराध के कितने मामले सामने आए। इसके समानांतर 2017 के बाद की भाजपा सरकार में अपराध नियंत्रण और माफिया के खिलाफ हुई कार्रवाई के आंकड़े रखकर जनता को समझाना भाजपा के चुनावी रणनीति का प्रमुख हिस्सा होगा।

भाजपा की रणनीति

दरअसल भाजपा के नेता जिस तरह से सपा-कांग्रेस के खिलाफ उनके शासनकाल में घटित घटनाओं को अपने भाषण का हिस्सा बना रहे हैं, उससे भी साफ है कि 2027 के चुनावी रणनीति में भी भाजपा यह जनता के मन में यही बिठाने की कोशिश करेगी कि सपा के दौर की तुलना में भाजपा सरकार ने कानून-व्यवस्था, विकास और गरीब कल्याण के मोर्चे पर क्या बेहतर किया? यानि ऐसे सवालों को तूल देकर भाजपा अपने शासन के च्रिपोर्ट कार्डज् पर केंद्रित करने को अपनी रणीनीति का हिस्सा बनाएगी।ज्भाजपा इस सवाल का जवाब नारे से नहीं, आंकड़ों से देने की कोशिश करेगी। साथ ही अपराध और कानून-व्यवस्था, बिजली, महिला सुरक्षा, माफिया पर कार्रवाई और गरीब कल्याण...इन पांच मोर्चों पर सरकार-दर-सरकार तुलनात्मक रिपोर्ट कार्ड सामने रखकर पार्टी 2027 की चुनावी बहस को च्कौन बेहतर शासन देता है के सवाल पर ले जाने की भी कोशिश करेगी। भाजपा की मौजूदा रणनीति के संकेत साफ हैं कि इस बार चुनावी मैदान में सिर्फ वोट नहीं, शासन के रिपोर्ट कार्ड की भी परीक्षा होगी।

24 वाली प्लानिंग से 2027 में बीजेपी को रोकने का प्लान

अखिलेश यादव यूपी चुनाव 2027 को लेकर पूरी रणनीति के साथ आगे बढ़ रहे हैं। 2024 के लोकसभा चुनाव में बीजेपी को जिस रणनीति से अखिलेश यादव ने यूपी में झटका दिया था, अब उसी रणनीति के जरिए अखिलेश यादव 2027 में बीजेपी को रोकने में जुट गए हैं। सपा प्रमुख अखिलेश यादव समाजवादी पीडीए यात्रा से यूपी चुनाव 2027 का माहौल बनाएंगे। यूपी चुनाव 2027 को लेकर खास रथ को तैयार किया गया। बुधवार को यह रथ समाजवादी पार्टी के लखनऊ कार्यालय पहुंच गया है। इस रथ पर समाजवादी पीडीए यात्रा लिखा गया है। इसके अलावा डॉ. बीआर आंबेडकर समेत 18 महारुषों की तस्वीरें लगाई गई हैं। यह खास रथ विशेष सुविधाओं से लैस एक लग्जरी बस है। लाल रंग के इस रथ पर सामाजित न्याय का परचम लहराएगा, पीडीए ही परिवर्तन लगाएगा नारा लिखा गया है। पीडीए की फुल फार्म दी गई है। पिछड़ा, दलित, अल्पसंख्यक रथ के नीचे लिखा हुआ है।अखिलेश यादव इससे पहले भी इस रथ का उपयोग चुनाव प्रचार में कर चुके हैं। अखिलेश ने सबसे पहले 2017 के विधानसभा चुनावों में पार्टी के प्रचार के लिए इसका उपयोग किया था और उसके बाद हर चुनाव में अलग-अलग नारों और टैगलाइन के साथ इसका इस्तेमाल किया। 2017 के चुनाव में इस बस का नाम समाजवादी विकास रथ था। 2022 में समाजवादी विजय यात्रा हो गया और 2024 में समाजवादी रथ यात्रा हो गया था।

24 में अखिलेश यादव ने इसी रथ पर चुनाव प्रचार किया था

लोकसभा चुनाव 2024 में अखिलेश ने सामाजिक न्याय और जाति जनगणना पर ध्यान केंद्रित करते हुए समाजवादी रथ यात्रा शुरू की थी। संविधान बचाओ का नारा न केवल पार्टी के प्रचार सामग्री में प्रमुखता से शामिल था, बल्कि उस कस्टमाइंड बस पर भी लिखा था, जिसका इस्तेमाल अखिलेश रोड शो के लिए करते थे। 2024 के लोकसभा चुनाव में सपा ने 37 सीटें जीतीं थी। पार्टी 2027 में भी इसी जीत को दोहराने की योजना बना रही है और शुरुआत के तौर पर जल्द ही शुरू होने वाले प्रचार अभियान के लिए समाजवादी रथ यात्रा नाम को ही बरकरार रखा है।

पीडीए के मुकाबले भाजपा का सामाजिक विस्तार

सपा के पीडीए के मुकाबले भाजपा गैर-यादव ओबीसी, गैर-जाटव दलित, सवर्ण और विभिन्न छोटे सामाजिक समूहों को साथ बनाए रखने की रणनीति अपनाएगी। 2024 के लोकसभा चुनाव में यूपी में भाजपा की सीटें 62 से घटकर 33 रह गईं, जबकि सपा ने 37 सीटें जीतीं। यही कारण है कि 2027 के लिए भाजपा के लिए सामाजिक समीकरण पहले से ज्यादा महत्वपूर्ण हो गया है। यानी संदेश देने की कोशिश होगी कि भाजपा सरकार का लाभ जाति देखकर नहीं, जरूरत के आधार पर मिला।

रोड शो के लिए अखिलेश यादव इस्तेमाल करेंगे

सपा सूत्रों का कहना है कि चुनाव के दौरान पार्टी अध्यक्ष की पूरे राज्य में रथ यात्रा निकालने की कोई योजना नहीं है। समाजवादी रथ यात्रा वाले रथ का इस्तेमाल रोड शो के लिए किया जाएगा, ताकि एक ही ज़िले में एक विधानसभा क्षेत्र से दूसरे विधानसभा क्षेत्र में जाते हुए जनसभाओं को संबोधित किया जा सके।

महिला सुरक्षा पर भी होगी सीधी तुलना

महिला अपराध भाजपा के लिए संवेदनशील लेकिन महत्वपूर्ण चुनावी मुद्दा होगा। महिला हेल्पलाइन, मिशन शक्ति, पुलिस रिस्पांस सिस्टम और थानों में महिला संबंधी शिकायतों की व्यवस्था को सपा शासनकाल से तुलना के साथ पेश करने पर फोकस किया जा सकता है। भाजपा सिर्फ अपराध घटने का दावा नहीं बल्कि एफआईआर, अपराध दर, चार्जशीट और दोषसिद्धि के आंकड़ों के जरिए यह बताने की कोशिश करेगी कि व्यवस्था में वास्तविक बदलाव कितना आया है।

अभी चुनाव-प्रचार का टाइम-टेबल तय नहीं

हालांकि, चुनाव-प्रचार का टाइम-टेबल अभी तय नहीं हुआ है, लेकिन सूत्रों का कहना है कि पार्टी लीडरशिप नवंबर से जोर-शोर से अभियान शुरू कर सकती है। उससे पहले अखिलेश के स्वक्के फ्रंटल संगठनों और अलग-अलग प्रकोष्ठों जैसे समाजवादी अधिवक्ता सभा (वकील), समाजवादी शिक्षक सभा (शिक्षक), समाजवादी व्यापार सभा (व्यापारी), अंबेडकर वाहिनी, पिछड़ा वर्ग प्रकोष्ठ आदि द्वारा आयोजित कार्यकर्ता सम्मेलनों और जनसभाओं को संबोधित करने की उम्मीद है। बस पर समाजवादी रथ यात्रा लिखा है। बस के एक तरफ स्वकचीफ की तस्वीर है और साथ में स्लोगन है, सामाजिक न्याय का परचम लहराएगा, रथ ही परिवर्तन लाएगा। दूसरी तरफ मुलायम सिंह यादव की बड़ी तस्वीर है, जिसके नीचे लिखा है, नेताजी अमर रहें और रथ के स्लोगन हैं। बस पर समाजवादी रथ यात्रा के नीचे पिछड़ा, दलित और अल्पसंख्यक भी लिखा है। बस पर आंबेडकर, जनेश्वर मिश्र, राम मनोहर लोहिया और बेनी प्रसाद वर्मा जैसे नेताओं की तस्वीरें भी लगी हैं।

सपा का दलित महासम्मेलन आगरा से

बहुजन समाज पार्टी में मची उठापटक और यूपी चुनाव को देखते हुए समाजवादी पार्टी ने दलित वोटरों पर फोकस बढ़ा दिया है। इसकी क्रम में सपा 15 नवंबर को दलित महासम्मेलन आयोजन करेगी। जिसकी शुरुआत आगरा से होने जा रही है। इस कार्यक्रम में सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव भी मौजूद रहेंगे। इस कार्यक्रम में आसपास से बड़ी संख्या में सपा कार्यकर्ता शामिल होंगे। यूपी की दलित राजनीति में आगरा बेहद अहम है। यही वजह है कि सपा ने दलित सम्मेलन की शुरुआत यहां से करने का फैसला लिया है। इस जिले का डॉ अंबेडकर और बसपा संस्थापक कांशीराम से भी ऐतिहासिक संबंध रहा है। 18 मार्च 1956 को आगरा में ही अंबेडकर ने यहां चक्की पाट जाटव बस्ती में अपना आखिरी बड़ा भाषण दिया था। उसी भाषण में उन्होंने बौद्ध धर्म अपनाने की घोषणा का संकेत दिया था ये भाषण नागपुर के दीक्षा समारोह से कुछ महीने पहले था। बसपा के संस्थापक कांशीराम ने 1978 में बमासेफ **Federation** की औपचारिक स्थापना की। उत्तर प्रदेश में इस संगठन की पहली इकाई 1978 में आगरा में ही शुरू हुई। बाद में लखनऊ में भी इकाई बनाई गई। समाजवादी पार्टी ने आगरा का चुनाव भी इसलिए किया है क्योंकि यहां जाटव समुदाय पहले से ही अपेक्षाकृत संगठित, शिक्षित और आर्थिक रूप से थोड़ा मजबूत था। अंबेडकरवादी चेतना भी यहां गहरी थी। कांशीराम ने इन्हीं शहरी, शिक्षित दलित कर्मचारियों और छोटे व्यापारियों को बामसेफ के जरिए जोड़ा। यही आधार बाद में डीएस-4 और बसपा का बना। कांशीराम ने आगरा को उत्तर भारत में बहुजन राजनीति का शुरुआती प्रयोगशाला बनाया। यहां की सामाजिक-आर्थिक स्थिति और अंबेडकरवादी पृष्ठभूमि ने उनके संगठन को जड़ें जमाने में मदद की। यही वजह है कि आज भी आगरा को दलित राजनीति का केंद्र माना जाता है।

दलित राजनीति का केंद्र रहा है आगरा

आगरा को यूपी में दलित राजनीति की राजधानी कहा जा सकता है क्योंकि यहां दलित चेतना, अंबेडकरवादी आंदोलन और चुनावी राजनीति का सबसे गहरा और संगठित आधार बना। यह सिर्फ आबादी के आंकड़ों की बात नहीं है। बल्कि इतिहास, सामाजिक-आर्थिक स्थिति और राजनीतिक प्रयोग का नतीजा है। दलित आंदोलन का पुराना गढ़ 1950-60 के दशक से ही आगरा में दलित संगठन सक्रिय रहे। जाटव समुदाय ने अंबेडकर की मूर्तियाँ निकालकर, जुलूस निकालकर और बौद्ध धर्म अपनाकर अपनी पहचान और अधिकारों का दावा किया। यह आंदोलन बाद में कांशीराम के **BAMCEF** और बहुजन समाज पार्टी का आधार बना। कांशीराम और मायावती दोनों के लिए पश्चिमी उत्तर प्रदेश, खासकर आगरा, प्रयोगशाला जैसा था। आगरा मंडल में 4 जिले आते हैं। आगरा, मथुरा, मैनपुरी, फिरोजाबाद इसके अलावा इटावा और हाथरस की सीमा भी इस जिले से सटती है, इन जिलों में दलित आबादी करीब 20 फीसदी से ज्यादा है। जिसमें जाटव की संख्या सबसे अधिक है। जो बसपा का कोर वोटर रहा है। सपा की कोशिश इसी वोटबैंक में सेंध लगाने की है।

इस क्षेत्र में दलित वोटरों की ताकत

एक अनुमान के मुताबिक आगरा में करीब 23 फीसदी जाटव हैं। जबकि मथुरा में 20 फीसदी, मैनपुरी में 20 फीसदी, फिरोजाबाद में 19 फीसदी, इटावा में 25 फीसदी और हाथरस में करीब 24 फीसदी जाटव वोटरों की संख्या है। पिछले कई सालों से अखिलेश यादव की नजर यूपी के दलित वोटरों पर है। इसी वजह से उन्होंने पहले मायावती से गठबंधन किया था हालांकि 2019 लोकसभा में उन्हें इसका फायदा नहीं हुआ था। लेकिन, मायावती के साथ आने से उन पर दलित विरोधी होने का आरोप फीका पड़ गया। 2022 और 2024 के चुनाव में अखिलेश यादव को इसका फायदा हुआ। यही वजह है कि अखिलेश यादव को अब नीला रंग भी पसंद आने लगा है और उन्होंने अपनी पार्टी के गमछे से लेकर टी शर्ट तक को नीला कर दिया है। यही नहीं पार्टी के दलित नेताओं को भी अहमियत देना शुरू कर दिया है। सपा का ये सम्मेलन भी ऐसे वक्त में हो रहा है जब बसपा में लगातार उठापटक मची हुई है। आकाश आनंद और ईशान आनंद पार्टी से बाहर कर दिए गए हैं। साथ ही पार्टी का युवा कार्यकर्ता परेशान है और वो नए नेतृत्व की ओर देख रहे हैं।

जिद... सच की

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma

@Editor_SanjayS

एआई को मानवीय संवेदना समझने वाला होना होगा

> आज दुनिया का सबसे चर्चित विषय बना हुआ है। इसलिए नहीं कि आने वाले दौर में मानव जीवन को पूरी तरह बदल देगा, बल्कि इस बहस के लिए कि इसके फायदे ज्यादा हैं अथवा नुकसान। यों तो हर तकनीक अपने साथ कुछ नया लेकर आती है और उस पर बहस भी अपने तरीके से चलती है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) आज चाहे जितना भी आगे चले जाए वह एचआई-ह्यूमैन इंटेलिजेंस की बराबरी पर कभी नहीं आ सकता है। क्योंकि उसमें मानवीय संवेदना समझने का सामर्थ्य अभी नहीं है। यही, चिंता एआइ की रफ्तार धीमी रखने पर जोर दे रही है। नई दुनिया बनाने के चक्कर में दुनिया का चक्र डांवाडोल न हो जाए। नई तकनीक का स्वागत है लेकिन आगे निकलने की होड़ में मानवता को नुकसान न पहुंचे, इसका ध्यान सभी को रखना होगा। आज दुनिया का सबसे चर्चित विषय बना हुआ है। इसलिए नहीं कि आने वाले दौर में मानव जीवन को पूरी तरह बदल देगा, बल्कि इस बहस के लिए कि इसके फायदे ज्यादा हैं अथवा नुकसान। यों तो हर तकनीक अपने साथ कुछ नया लेकर आती है और उस पर बहस भी अपने तरीके से चलती है। दुनिया में जब कम्प्यूटर आया तो उसके पक्ष और विपक्ष में तर्क रखने वालों की संख्या कम नहीं थी। अब, एआइ के पक्ष और विपक्ष में बोलने वालों की तादाद बढ़ती नजर आ रही है। अमरीकी राष्ट्रपति एआइ पर लगाम के पक्ष में तो नहीं है लेकिन उनकी चिंता इस क्षेत्र में चीन से आगे रहने की जरूर है।

आइआइएससी बैंगलोर के सहायक प्रोफेसर डॉ. प्रतोश एपी की स्पष्ट मान्यता है कि एआइ से तरक्की तो होगी लेकिन सवाल यह कि इससे खुश कौन रहेगा। दुनिया की बड़ी पांच एआइ कंपनियों में शुमार एंथ्रोपिक के सीईओ डारियो एमोदेई ने एआइ विकास की रफ्तार पर लगाम लगाने का समर्थन किया है। एमोदेई की सलाह का समर्थन एक्स एआइ कंपनी के मालिक एलन मस्क और ओपन एआइ के ऑल्टमैन ने भी किया है। मतलब साफ है कि दुनिया के शीर्ष उद्योगपति एआइ के पक्ष में तो हैं लेकिन उसकी रफ्तार को एक सीमा में बांधे रखना चाहते हैं। एआइ के फायदे-नुकसान की कशमकश में आम आदमी अब भी उधेड़बुन में है कि आखिर एआइ का भविष्य क्या होगा। उसकी चिंता इस बात को लेकर अधिक है कि एक तरफ उसकी रफ्तार कम रखने की बात करने वाले लोग भी उसके विकास पर अंधाधुंध खर्च कर रहे हैं। वर्ष 2024 में फिजिक्स का नोबेल पुरस्कार जीतने वाले जेफ्री हिंटन भी एआइ से मानवता के खत्म होने की आशंका जता चुके हैं। देखा जाए तो एआइ को लेकर भ्रम फैलाने के काम में वे कंपनियां आगे हैं, जो इस क्षेत्र में अपना वर्चस्व कायम करना चाहती हैं। ओपन एआइ, एंथ्रोपिक, माइक्रोसॉफ्ट और गूगल जैसी बड़ी कंपनियां उसकी सुरक्षा पर तो बात करती हैं लेकिन उनकी असली चिंता ये भी है कि उन्होंने अगर सुरक्षा पर अधिक ध्यान दिया तो कहीं एआइ की दौड़ में पिछड़ न जाएं। दुनिया के अनेक देश एआइ कंपनियों पर अघोषित नियंत्रण को लेकर भी काम कर रहे हैं।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

नशा कारोबार की बड़ी मछलियों पर कसें शिकंजा

अभय

फुकेत-दिल्ली फ्लाइट के पायलट द्वारा कैनबिस (गांजा) इस्तेमाल करने की शुरुआती जांच रिपोर्ट ने भारत में भांग (चरस) के इस्तेमाल और तस्करी पर फिर से ध्यान खींचा है। एक व्यावसायिक पायलट द्वारा ऐसा उपयोग दर्शाता है कि चरस की पहुंच सुरक्षा के लिहाज से महत्वपूर्ण पेशे तक भी हो चुकी है। हाल ही में हुई जब्ती की घटनाओं ने इस चुनौती को और उजागर किया है। खबरों के मुताबिक, तमिलनाडु की तांबरम सिटी पुलिस ने 135 किलोग्राम से ज्यादा गांजा जब्त किया, जिसे ओडिशा से भेजा गया था। मीडिया रिपोर्टों के अनुसार, ओडिशा की सोनपुर और कंधमाल जिला पुलिस ने भी ट्रकों से लगभग 23,000 किलोग्राम गांजा ज़ब्त किया है। असम और त्रिपुरा से भी भारी मात्रा में जब्ती की खबरें आई।

मुंबई और दिल्ली हवाई अड्डों पर भी भारी मात्रा में जब्ती की गयी। मुंबई के बोरीवली में हाइड्रोपोनिक तरीके से कैनबिस उगाने का पता चला। हम देखते हैं कि भारत के विभिन्न हिस्सों में विविध प्रकार के चरस उत्पादों की भारी जब्ती हो रही है, और तस्कर इन्हें लाने-ले जाने और वितरण के अलग-अलग ढंग अपना रहे हैं। भारत हर साल टनों के हिसाब से गांजा जब्त करता है और हजारों उपयोगकर्ताओं पर कार्रवाई की जाती है। तथापि, आंकड़े बताते हैं कि हम गलत लड़ाई लड़ रहे हैं-एक बड़ी चुनौती, जो वैश्विक व्यापारिक हितों से प्रेरित है, आने वाली है। अब इस पर ध्यान देने का सही समय है। 'विश्व मादक द्रव्य रिपोर्ट-2026' (जिसे सयुंक्त राष्ट्र के तत्वाधान में मादक द्रव्य एवं अपराध विभाग प्रकाशित करता है) कुछ हफ्ते पहले ही प्रकाशित हुई। इस रिपोर्ट की मुख्य बातें हैं। सर्वप्रथम, आज भी दुनिया में सर्वाधिक इस्तेमाल होने वाला नशीला पदार्थ गांजा है। साल 2024 में 25.6 करोड़ लोग गांजे का उपयोग करते बताए गए हैं, जो किसी भी अन्य नशीले पदार्थ का इस्तेमाल करने वालों से ज्यादा है; यह संख्या 15 से 64 साल की उम्र के लोगों की वैश्विक आबादी का 4.8 प्रतिशत बनती है। पिछले दशक में गांजे का सेवन करने वालों की संख्या 40 प्रतिशत से ज्यादा बढ़ी।

दूसरा, 'गांजे की खेती दुनिया के लगभग हर देश में होती है'। ज्यादातर तस्करी क्षेत्रीय स्तर पर होती है। लेकिन अंतर-क्षेत्रीय तस्करी बढ़ रही है। उत्तरी अमेरिका ऐसी तस्करी का बढ़ता हुआ स्रोत है। तीसरा, ज्यादा असरकारी गांजा उत्पादों की बड़ी रेंज बाजार में आ रही है। चौथा, दिसंबर 2025 तक, उरुग्वे, कनाडा और अमेरिका के 28 इलाकों में गैर-मेडिकल कामों के लिए भांग की

खेती, उत्पादन, बिक्री और उसे अपने पास रखने की इजाज़त दे दी गई है। चेक गणराज्य, जर्मनी, लक्जमबर्ग और माल्टा ने भी कुछ ऐसा ही किया। 'हालांकि, हालिया वर्षों में, नशीले पदार्थों के गैर-मेडिकल इस्तेमाल को नुकसानदेह माना जाने लगा है, जो उत्तरी अमेरिका में लोगों की बदलती सोच में झलकता है'। अंततः भांग तस्करी और इस्तेमाल वैश्विक चुनौती बना हुआ है। भारत के नशा नियंत्रण ब्यूरो के आंकड़ों के मुताबिक पहली बात, 2025 में 1.38 लाख एकड़ में भांग के पौधों को नष्ट किया गया, जो पिछले पांच सालों में सर्वाधिक है। गांजे से जुड़े 71,612 मामले दर्ज किए गए, जो पिछले 5 सालों में सबसे ज्यादा हैं। 628 हजार किलोग्राम गांजा ज़ब्त किया गया, जो 2024 से तो ज्यादा था लेकिन 2021 और 2022 से कम था। 2021-25 के दौरान हशीश के मामलों की क्षेत्रवार संख्या 2,416 से 3,255 के बीच रही। हालांकि, पिछले पांच सालों में हशीश की ज़ब्ती में काफी उतार-चढ़ाव हुआ, इस उतार-चढ़ाव पर नशा नियंत्रण ब्यूरो टिप्पणी यकीन से नहीं कर रहा-'शिनाख्त कम हुई या तस्करी के ढंग में संभावित बदलाव आया'। चौथी बात, हाइड्रोपोनिक गांजे (ज़्यादा असरदार, पोषक तत्वों से भरपूर) की तस्करी से बढ़ी है, खासकर महानगरों में। मामलों और ज़ब्त की गई मात्रा, दोनों बढ़ी हैं; 2025 में 862 किलोग्राम जब्त किया गया और 687 केस दर्ज किए गए, जो बीते चार साल (2021- 24) की कुल जब्ती और मामलों से भी ज़्यादा है। यानी भांग की जब्ती और नष्ट करने की कार्रवाई पहले के मुकाबले अधिक बनी हुई है। मई 2026 में राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो द्वारा प्रकाशित 'क्राइम इन इंडिया-2024' में नारकोटिक ड्रग्स एंड साइकोट्रोपिक सब्सटेंस एक्ट के तहत सभी मामलों का डेटा मौजूद है।

जिसके मुताबिक कुल मिलाकर करीब दो-तिहाई केस नशा बरामदगी या उपयोग करने के हैं और एक-तिहाई मामले तस्करी के हैं। नशा संबंधी घरेलू मामलों में आधे से ज़्यादा मामले गांजे के हैं; संस्थागत कार्रवाई की मुख्य नीति कम मात्रा में उपयोग करने वालों पर फोकस करने से प्रेरित लगती है। 'विधि सेंटर फॉर लीगल पॉलिसी' का अध्ययन, 'क्रिमिनलाइजेशन लीड्स टू एक्सप्लॉइटेशन' बताता है कि नशे के मामलों में गिरफ्तारी के आंकड़े बढ़ा-चढ़ाकर पेश करने के लिए पुलिस गांजे का प्रयोग करने वाले लोगों को निशाना बनाती है। इसे बदलना होगा।

जयसिंह रावत

इतिहास कूटनीति के बीच उलझा काली नदी का स्रोत

1814-16 के आंग्ल-नेपाल युद्ध के बाद ईस्ट इंडिया कंपनी और नेपाल के बीच हुई सुगौली संधि के अनुच्छेद पांच ने काली नदी को नेपाल की पश्चिमी सीमा का आधार बनाया। लेकिन संधि ने ऊपरी हिमालय में नदी के वास्तविक उद्गम को स्पष्ट निर्देशांकों से परिभाषित नहीं किया। कैप्टन विलियम जे. वेब ने 1815 से 1821 के बीच कुमाऊं का सर्वेक्षण किया।

नेपाल के विदेश मंत्री शिशिर खनाल ने भारत-नेपाल सीमा के उस विवाद को फिर उठाया है, जिसकी जड़ें 1816 की सुगौली संधि और उसके बाद हुए ब्रिटिश सर्वेक्षणों तक जाती हैं। खनाल ने 15 सितंबर को नेपाल की प्रतिनिधि सभा में कहा कि लिपुलेख, कालापानी और लिम्पियाधुरा को नेपाल के राजनीतिक मानचित्र में शामिल करना हमारा राष्ट्रीय संकल्प है। इस विवाद की कुंजी दो सौ साल पुराने एक सवाल में छिपी है—सुगौली संधि में जिस 'काली नदी' को सीमा माना गया, उसका वास्तविक उद्गम कहां है? नेपाल लिम्पियाधुरा की ओर से आने वाली लंबी और अधिक जलसमृद्ध कुटी-यांगती को काली या महाकाली की मूल धारा मानता है, जबकि भारत की ऐतिहासिक-प्रशासनिक स्थिति कालापानी क्षेत्र को उत्तराखंड के पिथौरागढ़ जिले का हिस्सा मानती रही है।

इसलिए यह जमीन से पहले नदी की पहचान का विवाद है। 1814-16 के आंग्ल-नेपाल युद्ध के बाद ईस्ट इंडिया कंपनी और नेपाल के बीच हुई सुगौली संधि के अनुच्छेद पांच ने काली नदी को नेपाल की पश्चिमी सीमा का आधार बनाया। लेकिन संधि ने ऊपरी हिमालय में नदी के वास्तविक उद्गम को स्पष्ट निर्देशांकों से परिभाषित नहीं किया। कैप्टन विलियम जे. वेब ने 1815 से 1821 के बीच कुमाऊं का सर्वेक्षण किया। मई, 1816 तक काली के ऊपरी स्रोतों तक पहुंच चुका था। कालापानी के झरने उसके शुरुआती सर्वेक्षण में महत्वपूर्ण भौगोलिक चिह्न के रूप में दर्ज हुए। वर्ष 1817 में ही यह विवाद ब्रिटिश भारतीय प्रशासन और नेपाल दरबार के सामने आ गया था। नेपाल के दावे की जांच के बाद काली के पूर्व में स्थित तिंकर और छांगरू क्षेत्र नेपाल को सौंप दिए गए। इसके बाद नेपाल ने पश्चिम की ओर दावा बढ़ाते हुए कहा कि कुटी घाटी से आने वाली कुटी-यांगती को काली की मुख्य धारा माना जाना चाहिए।

बाद में 'हिमालयन गजेटियर' में दर्ज विवरण के अनुसार वेब और अन्य अधिकारियों का मत था कि कालापानी के पवित्र स्रोत से निकलने वाली अपेक्षाकृत छोटी धारा को परंपरागत रूप से काली की मुख्य शाखा माना जाता था और उसी ने नदी को उसका नाम दिया। सबसे महत्वपूर्ण दस्तावेज 5 सितंबर, 1817 का तत्कालीन सरकारी निर्णय है। कुमाऊं के कमिश्नर जी.डब्ल्यू. ट्रेल को भेजे गए आदेश में गवर्नर-जनरल लॉर्ड मोइरा की सरकार ने नेपाल के कुटी और नाबी संबंधी दावे को स्वीकार नहीं किया। कालापानी नाम की धारा को काली की प्रमुख शाखा और दोनों राज्यों के बीच सीमा मानने की व्याख्या की गई।

इस प्रकार सुगौली संधि के तत्काल बाद ही विवाद की जांच हुई और कुटी-नाबी पर नेपाल का विस्तारित दावा अस्वीकार कर दिया गया। नेपाल उन्नीसवीं सदी के कुछ ब्रिटिश मानचित्रों को अपने पक्ष का प्रमाण मानता है। कुछ शुरुआती नक्शों में लिम्पियाधुरा से आने वाली पश्चिमी धारा को 'काली' दिखाया गया है। बाद के नक्शों में इसी धारा का नाम कुटी और फिर कुटी-यांगती दिखाई देने लगता है। यही विवाद का महत्वपूर्ण विरोधाभास है। 1817 का प्रशासनिक पत्राचार भारत के ऐतिहासिक पक्ष के समर्थन में प्रमाण प्रस्तुत करता है, जबकि कुछ ब्रिटिश मानचित्र नेपाल को अपने दावे के लिए आधार देते हैं। नेपाल का दूसरा प्रमुख तर्क जलविज्ञान पर आधारित है। लिम्पियाधुरा की ओर से आने वाली कुटी-यांगती लंबी है, उसका जलग्रहण क्षेत्र बड़ा है और उसका प्रवाह भी कालापानी की धारा से अधिक बताया जाता है। नदी-विज्ञान में मुख्य धारा पहचानने के लिए लंबाई, प्रवाह और जलग्रहण क्षेत्र महत्वपूर्ण मानदंड होते हैं। नेपाली शोधकर्ता इसी आधार पर इसे वास्तविक ऊपरी काली या महाकाली मानते हैं।

लेकिन अंतर्राष्ट्रीय सीमा केवल आधुनिक जलवैज्ञानिक सिद्धांत से निर्धारित नहीं होती। संधि में प्रयुक्त नदी का अर्थ तय करने में यह भी महत्वपूर्ण है कि संधि के समय दोनों पक्ष किस धारा को उस नाम से पहचानते थे, तत्कालीन प्रशासन ने संधि की कैसी व्याख्या की और बाद में किसका निरंतर प्रशासन रहा। यदि कालापानी से निकलने वाली धारा को सुगौली संधि वाली काली माना जाए तो सीमा की एक रेखा बनती है; यदि लिम्पियाधुरा से निकलने वाली कुटी-यांगती को वही काली माना जाए तो सीमा काफी पश्चिम खिसक जाती है। लिपुलेख का महत्व इसे और संवेदनशील बनाता है। यह क्षेत्र भारत, नेपाल और तिब्बत-चीन के संगम के निकट है। लिपुलेख सदियों से हिमालय पार व्यापार का मार्ग रहा है और आज कैलाश-मानसरोवर यात्रा का महत्वपूर्ण रास्ता है। इस विवाद ने 2020 में नया रूप तब लिया, जब नेपाल ने राजनीतिक मानचित्र जारी कर लिम्पियाधुरा, कालापानी और लिपुलेख को उसमें शामिल किया तथा संविधान संशोधन के जरिए उसे संवैधानिक मान्यता दी। भारत ने इस एकतरफा मानचित्रण को अस्वीकार किया।

वार्डरोब में रखें ये चीजें स्टाइलिंग होगी आसान!

फैशन की दुनिया में ट्रेंड्स आते-जाते रहते हैं, लेकिन कुछ कपड़े और एक्सेसरीज ऐसी होती हैं जो हर वार्डरोब की जरूरत बन जाती हैं। इन्हें बेसिक फैशन पीसेज कहा जा सकता है, क्योंकि इन्हें अलग-अलग आउटफिट्स के साथ आसानी से स्टाइल किया जा सकता है। एक अच्छी फिटिंग वाली सफेद शर्ट से लेकर क्लासिक ब्लू जींस, ब्लैक ट्राउजर और आरामदायक स्नीकर्स तक, ये चीजें रोजमर्रा के साथ-साथ दफ्तर, आउटिंग और कैजुअल मौकों पर भी काम आती हैं। खास बात यह है कि इन बेसिक पीसेज को थोड़ी क्रिएटिविटी के साथ अलग-अलग लुक में पहना जा सकता है। अगर आपकी अलमारी कपड़ों से भरी है लेकिन फिर भी रोज यह सवाल रहता है कि आज क्या पहनें? तो शायद आपको कुछ जरूरी बेसिक की कमी है। सही बेसिक कपड़ों का कलेक्शन न सिर्फ स्टाइलिंग आसान बनाता है, बल्कि कम कपड़ों में ज्यादा आउटफिट कॉम्बिनेशन तैयार करने में भी मदद करता है।

शोल्डर बैग

शोल्डर बैग एक बेहद लोकप्रिय और आरामदायक एक्सेसरी है, जिसे कंधे पर लटकाकर आसानी से कैरी किया जा सकता है। एक सिंपल ब्लैक, ब्राउन या टैन बैग स्टाइल के साथ-साथ रोजमर्रा की जरूरतों के लिए भी उपयोगी है। ऐसा डिजाइन चुनें जो अलग-अलग आउटफिट्स के साथ आसानी से मैच हो सके। यह कॉलेज, ऑफिस, ट्रैवल और कैजुअल आउटिंग्स के लिए एक बेहतरीन विकल्प है।

ब्लैक टी-शर्ट

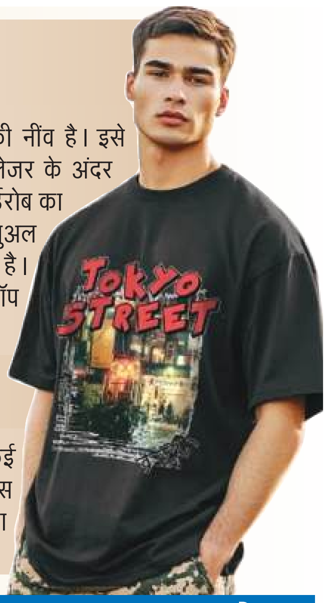

सादा टी-शर्ट किसी भी कैजुअल वार्डरोब की नींव है। इसे अकेले पहनने के अलावा शर्ट, जैकेट या ब्लेजर के अंदर लेयर किया जा सकता है। ब्लैक ट्राउजर वार्डरोब का ऐसा बेसिक है जिसे फॉर्मल और स्मार्ट-कैजुअल दोनों लुक में इस्तेमाल किया जा सकता है। न्यूट्रल रंग होने के कारण यह कई तरह के टॉप और शर्ट के साथ आसानी से मैच होता है।

आरामदायक स्नीकर्स

एक अच्छी क्वालिटी के व्हाइट या न्यूट्रल स्नीकर्स कई आउटफिट्स के साथ काम आते हैं। ये जींस, ट्राउजर, कैजुअल ड्रेस और यहां तक कि कुछ स्मार्ट-कैजुअल लुक के साथ भी पहन जा सकते हैं।

बेल्ट

बेल्ट एक बेहद जरूरी फैशन और उपयोगी एक्सेसरी है, जो कपड़ों की फिटिंग को सही रखने के साथ-साथ आपके लुक को भी स्टाइलिश बनाती है। एक क्लासिक ब्लैक या ब्राउन लेदर बेल्ट आपके वॉडरोब का हिस्सा जरूर होनी चाहिए। इसे फॉर्मल पैंट, आफिस आउटफिट, ट्राउजर सबके साथ कैरी कर सकते हैं।

न्यूट्रल कलर का ब्लेजर

न्यूट्रल कलर के ब्लेजर आपके वॉर्डरोब के लिए सबसे बहुमुखी और क्लासिक कपड़ों में से एक हैं। ब्लैक, नेवी या बेज ब्लेजर साधारण आउटफिट को तुरंत पॉलिस्ड लुक दे सकता है। दफ्तर की मीटिंग से लेकर डिनर तक इसे अलग-अलग तरह से स्टाइल किया जा सकता है।

ब्लैक फुटवियर

फुटवियर एक बेहद जरूरी फैशन चीज है। एक क्लासिक ब्लैक शू, लोफर या बैले फ्लैट जैसी जोड़ी अलग-अलग अवसरों के लिए उपयोगी होती है। सही फुटवियर पूरे लुक को अधिक आकर्षक और पॉलिस्ड बना सकता है।

डेनिम जैकेट

डेनिम जैकेट कैजुअल लुक के लिए एक टाइमलेस विकल्प है। इसे टी-शर्ट, ड्रेस, टॉप या स्वेटर के ऊपर पहना जा सकता है।

सफेद शर्ट और ब्लू जींस

एक क्लासिक सफेद रंग की शर्ट सबसे वर्सटाइल फैशन पीसेज में से एक है। इसे जींस के साथ कैजुअल, ट्राउजर के साथ ऑफिस लुक और ब्लेजर के साथ फॉर्मल अंदाज में पहना जा सकता है। ब्लू डेनिम लगभग हर मौसम और मौके के लिए उपयोगी है। स्ट्रेट, रिलैक्स्ड या स्लिम फिट जैसी पसंद के अनुसार इसे टी-शर्ट, शर्ट या टॉप के साथ स्टाइल किया जा सकता है।

हंसना मना है

दिल की बात दिल में मत रखना, जो पसंद हो उसे आईएलयू कहना, अगर वो गुस्से में आ जाये तो डरना मत, राखी निकालना और कहना, प्यारी बहना मिलती रहना।

इतनी हसीन है आप, खुद को दुनिया की नजरों से बचाया करो! आंखों में काजल लगाना काफी नहीं! गले में लिंबु-मिर्ची भी लटकाया करो।

वाईफ- अगर मैं माउंट एवरेस्ट पर चढ़ूं तो आप मुझे क्या दोगे? हसबैंड- पगली, इसमें पूछने वाली क्या बात है। धक्का।

मक्खी गंजे के सर पर बैठी थी, दुसरी ने कहा वाह.! क्या घर मिला है तुझे। पहली मक्खी : नहीं रे, अभी तो सिर्फ प्लॉट खरीदा है..!

अपना बच्चा रोये तो दिल में दर्द होता है, और दुसरे का रोये तो सिर में। अपनी बीवी रोये तो सिर में दर्द होता है, और दुसरे की रोये तो दिल में।

मेरी बात गौर से सुनना, अगर कोई आपको पागल कहे तो दुखी मत होना, अफ़सोस भी मत करना और रोना भी मत, बस आराम से चेयर पर बैठ कर सोचना की, इसे पता कैसे चला।

कहानी | मूर्ख बगुला और नेवला

कई सालों पहले की बात है, एक जंगल में एक बरगद का पेड़ था। उस बरगद के पेड़ पर एक बगुला रहा करता था। उसी पेड़ के नीचे एक बिल में एक सांप भी रहता था। वह सांप बड़ा ही दुष्ट था। अपनी भूख मिटाने के लिए वह बगुले के छोटे-छोटे बच्चों को खा जाया करता था। इस बात से बेचारा बगुला बहुत परेशान था। एक दिन की बात है, सांप की हरकतों से परेशान होकर बगुला नदी के किनारे जाकर बैठ गया। बैठे-बैठे अचानक उसकी आंखों में आंसू आ गए। बगुले को रोता देख नदी में से एक केकड़ा बाहर आया और बोला, अरे बगुला भैया, क्या बात है? यहां बैठे-बैठे आंसू क्यों बहा रहे हो? क्या परेशानी है? केकड़े की बात सुनकर बगुला बोला, क्या बताऊं केकड़े भाई, मैं तो उस सांप से परेशान हो गया हूं। वह बार-बार मेरे बच्चों को खा जाता है। घोंसला चाहे जितना भी ऊपर बनाऊं, वह ऊपर चढ़ ही जाता है। अब तो उसके कारण दाना पानी लेने के लिए घर से कहीं जाना भी मुश्किल हो गया है। तुम ही कोई उपाय बताओ। बगुले की बात सुनकर केकड़े ने सोचा कि बगुला भी तो अपना पेट भरने के लिए उसके परिवार वालों और दोस्तों को खा जाता है। क्यों न ऐसा कोई उपाय किया जाए कि सांप के साथ साथ बगुले का भी खेल खत्म हो जाए। तभी उसे एक उपाय सूझा। उसने बगुले से कहा, एक काम करो बगुला भैया। तुम्हारे पेड़ से कुछ ही दूर नेवले का बिल है। तुम सांप के बिल से लेकर नेवले के बिल तक मांस के टुकड़े बिछा दो। नेवला जब मांस खाते हुए सांप के बिल तक आएगा तो वह सांप को भी मार देगा। बगुले को यह उपाय सही लगा और उसने ठीक वैसा ही किया जैसा केकड़े ने कहा, लेकिन इसका परिणाम उसे भी भुगतना पड़ा। मांस के टुकड़े खाते-खाते जब नेवला पेड़ के पास आया तो उसने सांप के साथ बगुले को भी अपना शिकार बना लिया।

कहानी से सीख: दोस्तों, इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि किसी की भी बात पर आंख बंद करके विश्वास नहीं करना चाहिए। साथ ही उसके परिणाम और दुष्परिणाम के बारे में भी सोच लेना चाहिए।

7 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष

कार्यक्षेत्र में दोपहर बाद नए अवसर और लाभ मिलने के योग बनेंगे। व्यापारिक योजनाओं में दोपहर के बाद तेजी आएगी, बड़ा लाभ संभव है। ऊर्जा बनी रहेगी।

वृषभ

करियर और दफ्तर के काम में दोपहर बाद तेजी देखने को मिलेगी। कारोबारियों को अधिकारियों का सहयोग मिलेगा, नए सौदों में लाभ होगा। आय के नए स्रोत बनेंगे।

मिथुन

नौकरी में हैं तो इस दिन स्थितियां आपके पक्ष में आने लगेंगी, राहत महसूस होगी। कारोबारी हैं तो भाग्य का साथ मिलने से रुके हुए काम धीरे-धीरे पूरे होंगे।

कर्क

दोपहर के बाद अष्टम चंद्र का प्रभाव शुरू होने से सतर्क रहने की जरूरत है। दफ्तर की गॉसिप से दूर रहें, विरोधी हावी हो सकते हैं। अचानक कोई बड़ा खर्च आ सकता हैं।

सिंह

व्यापारिक मामलों में साझेदारी से अच्छा लाभ मिलने के योग हैं। नौकरी-पेशा जातकों को टीम वर्क से बड़ी सफलता मिलेगी। जीवनसाथी के साथ संबंध मधुर रहेंगे।

कन्या

दोपहर बाद कार्यस्थल पर आपके काम की सराहना होगी, विरोधी परास्त होंगे। कारोबारी हैं तो पुराने रुके हुए काम निपटाने में सफलता मिलेगी। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा।

तुला

नौकरी-पेशा हैं तो इस दिन मन थोड़ा चंचल या दुविधा में रह सकता है। व्यापारिक फैसलों में जल्दबाजी न करें, अनुभवी लोगों की सलाह लें। थकान महसूस हो सकती है।

वृश्चिक

नौकरी-पेशा हैं तो थोड़ा धैर्य बनाकर रखें। कारोबारी हैं तो बहस से बचें, शांति से काम निपटाएं। घरेलू मामलों में जीवनसाथी की राय जरूर लें।

धनु

नौकरी-पेशा के पराक्रम और आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। व्यापार में नए अवसर मिलेंगे, छोटी यात्राएं फलदायी रहेंगी। भाई-बहनों और दोस्तों का सहयोग मिलेगा।

मकर

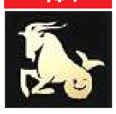

नौकरी-पेशा हैं तो वित्तीय मामलों में सोच-समझकर कदम बढ़ाएं। व्यापारिक लेनदेन में पारदर्शिता रखें। पारिवारिक माहौल खुशनुमा रहेगा, अपनों का साथ मिलेगा।

कुम्भ

नौकरी-पेशा हैं तो उत्साह और ऊर्जा बढ़ेगी। कारोबारी हैं तो आपके सोचे हुए कार्य पूरे होने लगेंगे, नए विचार आएंगे। लव लाइफ में मिठास बढ़ेगी, आकर्षण बना रहेगा।

मीन

दफ्तर में अपने काम पर ध्यान दें, दूसरों के विवाद में न पड़ें। नींद पूरी लें और ध्यान करें। कारोबारी हैं तो फिजूलखर्चों में बढ़ोतरी हो सकती है, बजट संभालें।

सोनू सूद ने बिहार में बाढ़ पीड़ितों का जाना हाल

बोले- यहां आना बहुत जरूरी था

बॉलीवुड अभिनेता सोनू सूद अक्सर आम लोगों की मदद करते हुए नजर आते हैं। कुछ दिनों पहले वह नेपाल के बाढ़ पीड़ितों से मिले थे और उन्होंने वहां के लोगों की मदद की थी। अब सोनू बिहार के बेगूसराय पहुंच गए हैं और एक्टर ने बाढ़ प्रभावित इलाकों का दौरा कर पीड़ितों का हाल जाना। सोनू सूद गंगा किनारे टूटी फूटी सड़कों पर पैदल चले और फिर कई किलोमीटर तक नाव की सवारी की। इसके बाद अभिनेता मटिहानी प्रखंड के सीमा पठला टोल, रामदीरी गांव पहुंचकर सैकड़ों बाढ़ पीड़ित परिवारों के बीच पहुंचे और राहत सामग्री बांटी। अब अभिनेता ने कहा है कि जब भी बिहार के लोग परेशानी में होंगे, वह हमेशा आते रहेंगे।

बाढ़ पीड़ितों से मिलने के बाद अभिनेता सोनू सूद ने कहा, यहां आना हमारे लिए बहुत जरूरी था। जब भी बिहार में लोगों को परेशानी होगी तो आना हर किसी का कर्तव्य बनता है। जब भी बिहार में मुश्किल आएगी, मैं हमेशा आता रहूंगा। अगर उन्हें परेशानी होगी तो मैं उनके साथ खड़ा रहूंगा। मुझे लगता है कि इसका कोई स्थायी समाधान होना चाहिए, ताकि लोगों को परेशानी न हो और मुझे विश्वास है कि सरकार इसके लिए कुछ बेहतर कदम जरूर उठाएगी। सोनू सूद ने आगे कहा, बिहार मेरा घर है और बिहार के लोग मेरे परिवार वाले हैं। जब भी मेरे परिवार वालों को तकलीफ होगी, तो मैं खड़ा रहूंगा। बिहार बाढ़ पीड़ितों से मिलने के बाद अभिनेता ने वहां के मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी से भी मुलाकात की। इसका एक पोस्ट अभिनेता ने अपने एक्स हैंडल पर शेयर किया। तस्वीरों में सोनू सूद और सम्राट चौधरी हाथ मिलाते हुए और साथ में पोज देते नजर आ रहे हैं। इस पोस्ट पर मुख्यमंत्री ने कैप्शन में लिखा, लोक सेवक आवास में आज सुप्रसिद्ध अभिनेता एवं समाजसेवी सोनू सूद से आत्मीय मुलाकात हुई।

कोमल रानी के साथ लालबागचा राजा के गोविंदा ने किये दर्शन

गोविंदा अपनी पर्सनल लाइफ को लेकर काफी समय से चर्चा में हैं। अब एक बार फिर कथित गर्लफ्रेंड कोमल रानी स्वर्णकार संग उनकी डेटिंग की अफवाह तेज होती नजर आ रही है। दरअसल, मंगलवार शाम गोविंदा जब मुंबई के लालबागचा राजा के दर्शन के लिए पहुंचे, तो लोगों की नजरें सुनीता आहूजा को ढूंढ रही थीं, लेकिन यहां कहानी का रुख कुछ और ही निकला। गोविंदा कोमल रानी के साथ बप्पा के दर्शन करते नजर आए। दोनों का साथ में सामने आया वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है, जिसके बाद एक बार फिर उनकी नजदीकियों को लेकर चर्चाएं तेज हो गई हैं। गोविंदा और कोमल रानी को लेकर चर्चा उस वक्त और तेज हुई, जब दोनों को अगस्त में एयरपोर्ट पर साथ देखा गया। इसके बाद सुनीता आहूजा ने पपाराजी से बात करते हुए गोविंदा पर कोमल के साथ अफेयर का आरोप लगाया और उन्हें अपनी बेटी की उम्र की लड़की के साथ घूमने पर तंज कसा। बात तलाक तक भी पहुंची पर सुनीता ने तलाक की अर्जी वापस ले ली। गोविंदा और कोमल रानी साथ में लालबागचा राजा के दर्शन करने पहुंचे जहां दोनों ने पंडाल में प्रसाद चढ़ाया और पूजा-अर्चना में हिस्सा लिया। इस दौरान पुजारी ने दोनों के माथे पर तिलक भी लगाया। दर्शन के बाद गोविंदा ने बाहर मौजूद फैंस से हाथ हिलाकर मुलाकात की।

जन्म दिन पर विशेष: प्रेम नाम है मेरा प्रेम चोपड़ा

हिंदी सिनेमा में कुछ कलाकार ऐसे रहे हैं, जिन्होंने पर्दे पर अपनी पहचान इस कदर गढ़ी कि उनका नाम लेते ही एक पूरा किरदार आंखों के सामने आ जाता है। प्रेम चोपड़ा भी ऐसे ही दिग्गज अभिनेता हैं। प्रेम नाम है मेरा, प्रेम चोपड़ा जैसे डायलॉग ने उन्हें घर-घर में पहचान दिलाई, तो उनके खलनायक वाले किरदारों ने दर्शकों के मन में एक अलग ही छवि बना दी। मगर प्रेम चोपड़ा ने फिल्मों में आने से पहले अखबार की नौकरी की, महीनों संघर्ष किया और फिर एक ट्रेन में हुई मुलाकात ने उनकी जिंदगी की दिशा ही बदल दी। 23 सितंबर, 1935 को पाकिस्तान के लाहौर में जन्मे प्रेम चोपड़ा का पालन-पोषण शिमला की वादियों में हुआ। इसके बाद अभिनेता ने पिता के कहने पर अपनी आगे की पढ़ाई पूरी की और पंजाब यूनिवर्सिटी से ग्रेजुएशन की डिग्री ली। दिग्गज अभिनेता के पिता हमेशा से चाहते थे कि उनका बेटा डॉक्टर, आईएएस अफसर बने, लेकिन लेकिन प्रेम चोपड़ा की आंखें मुंबई के बड़े पर्दे के सपने देख रही थी, जिसे पूरा करने के लिए वह मुंबई आ गए। एक दिन जब प्रेम चोपड़ा ट्रेन में सफर कर रहे थे, तो एक पंजाबी फिल्म निर्माता की नजर उन पर पड़ी। उन्होंने प्रेम चोपड़ा को अपनी अगली फिल्म चौधरी करनैल सिंह के लिए साइन कर लिया। इस तरह प्रेम चोपड़ा को उनकी पहली फिल्म मिली, जिसने नेशनल अवॉर्ड भी जीता था। इस फिल्म के बाद लगा- अब मुंबई में टिक सकते हैं।

चोपड़ा ने अखबार में करते थे नौकरी, ट्रेन में मिला पहला ऑफर

हनुमान अंश ओटीटी रिलीज की भी तैयारी!

आध्यात्मिक गुरु नीम करोली बाबा पर बनी भक्ति फिल्म हनुमान अंश ने बॉक्स ऑफिस पर ब्लॉकबस्टर सफलता का नया इतिहास लिखा है। किसी ने नहीं सोचा था कि रिलीज के पहले दिन 10 लाख कमाने वाली यह फिल्म 47 दिन में देश में 13946.50 प्रतिशत नेट का प्रॉफिट कमा लेगी। अब हर किसी को फिल्म की ओटीटी रिलीज का इंतजार है। लेकिन सिनेमाघरों में जिस तरह की भीड़ दिख रही है, मेकर्स ने साफ किया है कि दर्शकों को घर बैठकर फिल्म देखने के लिए अभी लंबा इंतजार करना पड़ सकता है। ओटीटी रिलीज में अभी काफी वक्त है, लेकिन ऑफर्स आ रहे हैं। फिल्म की चार प्रोड्यूसर्स में से एक रागिनी सोना का कहना है कि वह यह मानकर चल रही हैं कि हनुमान अंश सिनेमाघरों में 100 दिन का सफर पूरा करेगी। लेकिन क्या यह संभव होगा, क्योंकि 02 अक्टूबर को अजय देवगन की दृश्यम: द कन्क्लूजन भी रिलीज होने वाली है।' डॉ. विशाल चतुर्वेदी के डायरेक्शन में बनी हनुमान अंश का बजट 2 करोड़ है। इसे रागिनी सोना, नम्रता जी सिंह, अनुप्रिया ए नागर और खुद डायरेक्टर डॉ. विशाल चतुर्वेदी ने मिलकर को-प्रोड्यूस किया है। 47 दिनों में यह फिल्म देश में 280.93 करोड़ की नेट कमाई और वर्ल्डवाइड 366.45 करोड़ का ग्रॉस कलेक्शन कर चुकी है। मंगलवार को 47वें दिन भी 4.90 करोड़ की नेट कमाई हुई और वीकडेज के बावजूद सिनेमाघरों में औसतन 26 प्रतिशत सीटें भरी हुई दिखी हैं। एक तरफ जहां दर्शकों को हनुमान अंश की ओटीटी रिलीज का इंतजार है, वहीं बीते दिनों ऐसी खबरें आई थीं कि किसी प्रमुख ओटीटी प्लेटफॉर्म ने मेकर्स को इसके लिए 100 करोड़ की डील दी है। हालांकि, रागिनी सोना ने इस खबर को नकार दिया है। इंडियन एक्सप्रेस से बातचीत में वह कहती हैं, मुझे लगता है कि विशाल चतुर्वेदी की अपनी राय है और मैं उसका सम्मान करती हूं, क्योंकि उन्होंने ही इसे बनाया है और उनके सभी फैसले सही साबित हुए हैं। मैं उनके फैसले का सम्मान करूंगी, क्योंकि वह अभी भी कह रहे हैं कि ओटीटी के लिए वह कुछ और समय इंतजार करेंगे। हमें ऑफर मिल रहे हैं, लेकिन 100 करोड़ का ऑफर निश्चित रूप से नहीं मिला है। हम जल्द ही अपनी ओटीटी डील की घोषणा करेंगे, लेकिन अभी तुरंत नहीं।

कैटरीना कैफ की ट्रोलिंग पर भड़कीं परिणीति

आलोचकों को दिया करारा जवाब, बोलीं- यह अनपढ़ सोच लगती है

हाल ही में कटरीना कैफ के लिए एक आम सी आउटिंग बहुत खास बन गई। प्रेग्नेंसी के बाद उनके शरीर में आए बदलावों को लेकर कई यूजर्स ने उन्हें ट्रोल किया। हालांकि अभिनेत्री ने इस पर कुछ नहीं कहा लेकिन उनके फैंस और सेलेब्स उनके बचाव में आगे आए हैं। अब एक्ट्रेस परिणीति चोपड़ा ने भी उनका समर्थन किया है। अभिनेत्री परिणीति चोपड़ा ने बेटे के जन्म के बाद कैटरीना कैफ के लुक को लेकर हुई ऑनलाइन ट्रोलिंग पर उनका समर्थन किया है। परिणीति ने कहा, जब कोई महिला के डिलीवरी के बाद शरीर पर कमेंट करता है, तो मुझे यह अनपढ़ सोच लगती है। जैसे आप बाल कटवाते हैं, तो आपके बाल छोटे हो जाते हैं। आप छुट्टी मनाने जाते हैं तो वापस आने पर आपकी स्किन टैन हो जाती है। आप जिम जाते हैं तो आपके एब्स बनते हैं। आपने अपने शरीर के साथ जो किया है, उसका असर नजर आता है और इन सभी चीजों को सेलिब्रेट किया जाता है। उन्होंने आगे कहा, लेकिन जब आप एक इंसान को जन्म देते हैं, एक बच्चे को दुनिया में लाते हैं, तो शरीर पर उसका निशान क्यों नहीं सेलिब्रेट किया जाता? इसमें नेगेटिव क्या है? मैं किसी महिला को देखकर कहूंगी, 'ओह माय गॉड, मैं स्ट्रेच मार्क देख पा रही हूं। क्या आपने बच्चे को जन्म दिया है? यह तो बहुत खूबसूरत बात है। आपका बच्चा कैसा है?' मैं किसी महिला को इसी नजरिए से देखूंगी। परिणीति ने पिछले साल अक्टूबर में अपने बेटे को जन्म दिया था। उन्होंने यह भी बताया कि वह जानबूझकर सोशल मीडिया से दूर रहती हैं, ताकि नकारात्मकता और ट्रोलिंग से बच सकें। उन्होंने कहा, मैं सोशल मीडिया पर ज्यादा समय नहीं बिताती हूं, इसलिए मुझे किसी भी तरह की ट्रोलिंग के बारे में पढ़ने का मौका नहीं मिलता। मुझे अपने आसपास या दूसरे लोगों के आसपास हो रही ट्रोलिंग के बारे में भी पता नहीं चलता। सच कहूं तो मुझे ज्यादातर चीजों के बारे में पता ही नहीं होता, क्योंकि मेरे लिए यह सब इतना मायने नहीं रखता। यह समय की बर्बादी है।

बंगाल में खुला निवेश का नया दरवाजा

गौतम अडानी का 1 लाख करोड़ निवेश का एलान

» 2,000 बेड के 'अडानी आरोग्य मंदिर' से शुरुआत

» हजारों रोजगार, पोर्ट, लॉजिस्टिक्स, पावर, रोड और डाटा सेंटर तक विस्तार का प्लान

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोलकाता। पश्चिम बंगाल में सत्ता परिवर्तन के बाद उद्योग और निवेश को लेकर सरकार की ओर से जिस नए माहौल का दावा किया जा रहा था आज उसे एक बड़े कॉरपोरेट निवेश ऐलान का आकार मिलता दिखाई दिया। कोलकाता के न्यू टाउन में 2,000 बेड वाले 'अडानी आरोग्य मंदिर' की आधारशिला रखने पहुंचे अडानी ग्रुप के चेयरमैन गौतम अडानी ने बंगाल में 2035 तक एक लाख करोड़ रुपये से अधिक निवेश की योजना का ऐलान किया। यह निवेश सिर्फ स्वास्थ्य क्षेत्र तक सीमित नहीं रहेगा। समूह की योजना पोर्ट, लॉजिस्टिक्स, पावर, सड़क और डाटा सेंटर जैसे क्षेत्रों में भी विस्तार की है। न्यू टाउन में रखी गई अस्पताल की नींव को केवल एक अस्पताल की शुरुआत के तौर पर देखना इस पूरी घोषणा की तस्वीर को छोटा कर देगा।

2,000 बेड का अस्पताल दरअसल उस बड़े निवेश रोडमैप का पहला बड़ा दिखाई देने वाला प्रोजेक्ट है जिसका दायरा अगले करीब एक दशक में बंगाल की अर्थव्यवस्था के कयी अहम क्षेत्रों तक फैलने की बात कही गई है। अब इस पूरी कहानी को बंगाल की बदलती राजनीतिक अर्थव्यवस्था के संदर्भ में देखना जरूरी है। बंगाल में भाजपा सरकार आने के बाद मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी लगातार उद्योग और निवेश को राज्य की प्राथमिकताओं में रखने की बात कह रहे हैं। सरकार ने औद्योगिक जमीन नीति तैयार करने और निवेशकों के लिए सिंगल विंडो जैसी व्यवस्था पर काम करने की घोषणा की है। बुधवार को मुख्यमंत्री ने कहा था कि नई औद्योगिक भूमि नीति दुर्गा पूजा से पहले पेश की जाएगी। उसी कार्यक्रम में 33 उद्योगों को जमीन आवंटन पत्र दिए गए जिनसे करीब 60 हजार करोड़ रुपये के निवेश और 62 हजार रोजगार आने की उम्मीद जताई गई।गौतम अडानी ने अपने संबोधन में कहा कि अडानी आरोग्य मंदिर एक विश्वस्तरीय और गैर-लाभकारी चिकित्सा संस्थान होगा। इसके कुल 2,000 बिस्तरों में से 1,000 बिस्तर राज्य और केंद्र सरकार की स्वास्थ्य बीमा योजनाओं के तहत पात्र आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के लिए आरक्षित रखे जाएंगे। इस संस्थान के केंद्र में उन्नत अनुसंधान और देखभाल सुविधाओं से लैस एक अत्याधुनिक मेडिकल कॉलेज होगा। अधिकसे अधिक रोजगार के अवसर पैदा होने की प्रबल संभावना है।

तेजी से बदलती बंगाल की अर्थव्यवस्था

सीएम शुभेंदु ने गौतम अडानी से मांगी मदद

अडानी ग्रुप के चेयरमैन गौतम अडानी ने कोलकाता के न्यू टाउन में अदाणी आरोग्य मंदिर अस्पताल की आधारशिला रखी। इस खास अवसर पर सीएम शुभेंदु अधिकारी ने गौतम अडानी से अपील करते हुए कहा कि वे बंगाल को दोबारा खड़ा करने में उनकी मदद करें, उनकी सरकार की मदद करें. बंगाल के लोग बहुत ज्यादा सह रहे हैं। सीएम शुभेंदु ने कहा कि कम्युनिस्टों ने 54 छोटी मीडिया इंडस्ट्रीज को बंद कर दिया। पिछले 15 सालों में पिछली सरकार को बंगाल में इंडस्ट्रियन ग्रोथ को बढ़ाने में कोई रुचि नहीं रही। उनको सिर्फ राजनीति करने में रुचि थी. लेकिन अब ये सब बीते हुए कल की बात हो चुकी है। सीएम शुभेंदु अधिकारी ने कहा कि बंगाल के लोगों ने पीएम मोदी के नेतृत्व पर भरोसा जताते हुए हमें भारी बहुमत दिया है। अडानी जी आप बंगाल को खड़ा करने में हमारी सरकार की मदद कीजिए उन्होंने कहा कि कुछ महीने पहले करण अडानी ने उनसे कहा था कि अडानी ग्रुप कोलकाता में इंटरनेशनल स्तर का मॉर्डन हॉस्पिटल बनाना चाहता है और देखिए महज 2-3 महीने में इसका भूमि पूजन भी हो गया। उन्होंने अडानी ग्रुप के चेयरमैन से ममता सरकार में उपेक्षा के शिकार हुए पश्चिम बंगाल को फिर से खड़ा करने में मदद मांगी।

कोलकाता में अपार संभावनाएं : अडानी

पश्चिम बंगाल में कार्यक्रम में बोलते हुए ग्रुप के चेयरमैन गौतम अडानी ने मेडिकल कॉलेज को लेकर कहा कि हम इस फैसिलिटी में 4 हजार करोड़ का निवेश करेंगे। इससे रोजगार के हजारों अवसर पैदा होंगे। गौतम अडानी ने कहा कि पश्चिम बंगाल के कोलकाता की खास बात यह है कि ये प्राकृतिक समुद्री मार्ग पर स्थित है। इसमें अपार संभावनाएं हैं। अडानी ग्रुप के लिए इंफ्रास्ट्रक्चर बेहद अहम है और यहां अलग-अलग सेक्टर्स में 1 लाख करोड़ रुपये का निवेश किया जाएगा। उन्होंने घोषणा की कि उनका समूह ऐतिहासिक राइटर्स बिल्डिंग के जीर्णोद्धार, कुमारटोली घाट के पुनरुद्धार और कोलकाता की दुर्गा पूजा की अद्भुत कला को दुनिया के सामने प्रदर्शित करने की पहलों का पूरी तरह समर्थन करेगा। अडानी ने बंगाल की वास्तुकला, कला, साहित्य और त्योहारों को अनमोल बताया।

निवेश की कहानी सिर्फ ईंट, सीमेंट और मशीनों की कहानी नहीं है

अडानी ग्रुप के पश्चिम बंगाल में जिस निवेश का एलान किया गया है उसमें मेडिकल शिक्षा आएगी हेल्थ सेवाओं का विस्तार डाक्टरों और पैरामेडिकल स्टाफ के लिए अवसर अस्पताल से जुड़ा सपोर्ट सिस्टम खड़ा और इसके आसपास पूरी हेल्थ इकोनॉमी विकसित होने की संभावना बनेगी। अस्पताल परियोजना से करीब 10 हजार रोजगार पैदा होने की संभावना बताई गई है। लेकिन गौतम अडानी की घोषणा का असली आकार अस्पताल से बहुत बड़ा है उन्होंने कहा कि कोलकाता की भौगोलिक स्थिति और प्राकृतिक समुद्री मार्ग से जुड़ाव इसे व्यापक आर्थिक गतिविधियों के लिए महत्वपूर्ण बनाता है। अडानी समूह की योजना इसी आधार पर राज्य में अलग अलग क्षेत्रों में निवेश बढ़ाने की है। प्रस्तावित एक लाख करोड़ रुपये का निवेश पोर्ट, लॉजिस्टिक्स, पावर, रोड और डाटा सेंटर जैसे क्षेत्रों में जाने की बात कही गई है। अपनी दीर्घकालिक योजना के तहत अडानी समूह 2035 तक बंदरगाहों, रसद, बिजली उत्पादन, सड़कों, पुलों, राजमार्ग, हरित सीमेंट और हाइपरस्केल डेटा केंद्रों जैसे अहम औद्योगिक और ढांचागत क्षेत्रों में नवेश करेगा। बंगाल की रणनीतिक स्थिति के महत्व पर प्रकाश डालते हुए अडानी ने कहा कि इस राज्य में भारत के औद्योगिक क्षेत्रों, पूर्वोत्तर और बंगाल की खाड़ी के बीच एक प्रमुख समुद्री और रसद कड़ी के रूप में काम करने की अपार क्षमता है। उन्होंने जोर देकर कहा कि यह भौगोलिक स्थिति बंगाल को एक ऐसा ढांचागत लाभ देती है, जिसकी बराबरी बहुत कम क्षेत्र कर सकते हैं और इसी वजह से यह सिर्फ एक प्रवेश द्वार से कहीं अधिक बड़ी आर्थिक ताकत बनने की क्षमता रखता है। उन्होंने जोर देकर कहा कि किसी समाज की प्रगति को केवल सड़कों की लंबाई या निवेश की गई धनराशि से नहीं मापा जा सकता, बल्कि उसे अपनी पहचान देने वाली मूल्यवान संस्कृति और संस्थाओं की रक्षा भी करनी चाहिए।

पत्नी के साथ कालीघाट मंदिर में की पूजा

आज की सुबह गौतम अडानी की शुरुआत भी बंगाल के सांस्कृतिक और धार्मिक प्रतीक से हुई। वह पत्नी प्रीति अडानी के साथ कोलकाता के प्रसिद्ध कालीघाट मंदिर पहुंचे जहां उन्होंने पूजा अर्चना की। इसके बाद न्यू टाउन पहुंचे जहां मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी के साथ उन्होंने अडानी आरोग्य मंदिर का भूमिपूजन किया। कार्यक्रम में उनके बेटे और अदाणी पोर्ट्स एंड एसईजेड के एमडी करण अडानी भी मौजूद रहे। अस्पताल परियोजना पर करीब 4,000 करोड़ रुपये निवेश की बात सामने आई है। प्रस्तावित संस्थान सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल और मेडिकल कॉलेज के रूप में विकसित किया जाएग जिसे 2035 तक पूरा करने का लक्ष्य है और कुल 2,000 बेड में से करीब 1,000 बेड आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के मरीजों के लिए स्वास्थ्य बीमा योजनाओं के तहत उपलब्ध कराने की बात कही गई है।

ट्रैक्टर से टक्कर के बाद चालक के अपहरण का आरोप

» फॉर्च्यूनर सवार दो युवकों ने की मारपीट, पारा पुलिस ने बरामद कर शुरू की जांच

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। मुख्यमंत्री के कार्यक्रम के लिए वरुण विहार में मोबाइल टॉयलेट लगाकर वापस लौट रहे नगर निगम से जुड़े ट्रैक्टर चालक के अपहरण का मामला सामने आया है। आगरा एक्सप्रेसवे के जीरो प्वाइंट के पास ट्रैक्टर की फॉर्च्यूनर गाड़ी से टक्कर होने के बाद विवाद हुआ।

आरोप है कि फॉर्च्यूनर सवार दो युवकों ने ट्रैक्टर चालक शुभम सिंह के साथ मारपीट की और बाद में उसे जबरन अपनी गाड़ी में बैठाकर बनारस ले गए। टक्कर के बाद चालक शुभम सिंह ने फोन कर घटना की जानकारी अपने सुपरवाइजर को दी।

वनडे सीरीज में रोहित-कोहली के निशाने पर कई बड़े रिकॉर्ड

» वनडे में रोहित 12,000 रन और कोहली 15,000 रन बनाने के बेहद करीब

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

तिरुवनंतपुरम। भारत और वेस्टइंडीज के बीच तीन मैचों की वनडे सीरीज 27 सितंबर से शुरू होने जा रही है। इस सीरीज में एक बार फिर क्रिकेट फैंस की नजरें रोहित शर्मा और विराट कोहली पर होंगी। यह सीरीज दोनों के लिए व्यक्तिगत उपलब्धियों के लिहाज से भी खास हो सकती है। रोहित और विराट के पास कई बड़े रिकॉर्ड अपने नाम करने का मौका है। रोहित शर्मा इस समय वनडे क्रिकेट में 12,000 रन के बेहद करीब हैं। उन्होंने अब तक 288 वनडे मैचों में 11,895 रन बनाए हैं। ऐसे में इस ऐतिहासिक आंकड़े तक पहुंचने के लिए उन्हें 105 रन की जरूरत है।

विराट कोहली के लिए वेस्टइंडीज सीरीज सबसे ज्यादा चर्चा में रहने वाली उपलब्धियों में से एक की वजह से खास हो सकती है। कोहली वनडे क्रिकेट में 15,000 रन पूरे करने के बेहद करीब हैं। उन्होंने अब तक 314 वनडे मैचों की 302 पारियों में 14,941 रन बनाए हैं। यानी इस ऐतिहासिक आंकड़े तक पहुंचने के लिए उन्हें सिर्फ 59 रन चाहिए। वहीं रोहित शर्मा के पास बतौर ओपनर वनडे क्रिकेट में 10,000 रन पूरे करने का भी मौका है। इस मुकाम तक पहुंचने के लिए उन्हें 135 रन और बनाने होंगे। रोहित लंबे समय से वनडे क्रिकेट में भारतीय पारी की शुरुआत करते रहे हैं और इस भूमिका में उनके नाम कई बड़े रिकॉर्ड दर्ज हैं। विराट कोहली लिस्ट ए क्रिकेट में शतकों के मामले में भी सचिन तेंदुलकर के बेहद करीब हैं। सचिन के नाम 60 लिस्ट ए शतक दर्ज हैं, जबकि कोहली के नाम 59 शतक हैं। यानी दो और शतक लगाते ही कोहली सचिन तेंदुलकर के इस रिकॉर्ड को पीछे छोड़ सकते हैं।

अंडर-19 वनडे सीरीज: भारत ने कंगारूओं का किया क्लीन स्वीप

राजकोट। भारत की अंडर-19 क्रिकेट टीम ने बुधवार को निरंजन शाह स्टेडियम में खेले गए तीसरे वनडे मुकाबले में ऑस्ट्रेलिया को छह विकेट से हरा दिया। इस जीत के साथ भारत ने अनौपचारिक तीन मैचों की वनडे सीरीज में ऑस्ट्रेलिया का 3-0 से क्लीन स्वीप कर दिया। सीरीज के पहले मुकाबले में भारत ने ऑस्ट्रेलिया को सात रन से हराया था। इसके बाद दूसरे वनडे में भारतीय टीम ने 103 रन से बड़ी जीत दर्ज की। तीसरे मैच में भी भारत ने शानदार प्रदर्शन करते हुए ऑस्ट्रेलिया को सीरीज में एक भी जीत हासिल करने का मौका नहीं दिया। टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी ऑस्ट्रेलिया की अंडर-19 टीम 49.3 ओवर में 254 रन पर ऑलआउट हो गई। 255 रन के लक्ष्य का पीछा करने उतरी भारतीय टीम ने 41.2 ओवर में चार विकेट खोकर मुकाबला अपने नाम कर लिया। कप्तान लक्ष्य रायचंदानी ने एक छोर संभालते हुए शानदार शतकीय पारी खेली और टीम को जीत तक पहुंचाया।

यूपी की कमान तावड़े के हाथ, महाराष्ट्र में लग चुका है नोट बांटने का आरोप

» विरार के होटल में घेराव, चुनाव अधिकारियों ने बरामद की थी लाखों की नकदी

» पुलिस ने दर्ज की थी एफआईआर तावड़े ने आरोपों से किया था इनकार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। भारतीय जनता पार्टी ने 2027 के विधानसभा चुनाव से पहले उत्तर प्रदेश की सियासी बिसात पर बड़ा दांव खेलते हुए विनोद तावड़े को प्रदेश का प्रभारी बनाया है। संगठन और चुनावी रणनीति के लंबे अनुभव वाले तावड़े अब देश के सबसे बड़े चुनावी राज्य में बीजेपी की रणनीति संभालेंगे।

चुनाव अधिकारियों ने बरामद किये थे 10 लाख रुपये

मामला सामने आने के बाद चुनाव अधिकारियों की टीम मौके पर पहुंची। होटल के कमरों से करीब 10 लाख रुपये नकद बरामद किए जाने की रिपोर्ट सामने आई। अलग अलग रिपोर्टों में जब्त रकम की राशि 9.53 लाख से 9.93 लाख के बीच बताई गई है। साथ ही प्रचार सामग्री और अन्य सामान भी जब्त किए जाने की जानकारी सामने आई। पुलिस ने मामले में एफआईआर दर्ज की थी। यानी आरोप महज राजनीतिक बयानबाजी तक सीमित नहीं रहे। चुनाव अधिकारियों की कार्रवाई नकदी की बरामदगी और एफआईआर तीनों इस विवाद का हिस्सा बने।

राजनीतिक सवाल बड़ा है

जिस नेता को अब उत्तर प्रदेश जैसे विशाल राज्य में बीजेपी की चुनावी रणनीति और संगठनात्मक तैयारियों की जिम्मेदारी मिली है उसके अतीत का यह विवाद स्वाभाविक रूप से विपक्ष के निशाने पर है। खासकर तब जब उत्तर प्रदेश में 2027 का विधानसभा चुनाव सामने है और चुनावी राजनीति में पैसा संगठन और बूथ मैनेजमेंट जैसे मुद्दे हमेशा संवेदनशील रहे हैं। यानी बीजेपी ने जिस नेता को यूपी भेजा है उसके पास लंबा संगठनात्मक अनुभव है लेकिन उसके साथ 2024 का महाराष्ट्र का कैश विवाद भी राजनीतिक फाइल में दर्ज है। अब सवाल यह है कि उत्तर प्रदेश की राजनीति में तावड़े की नई पारी किस तरह आगे बढ़ती है। महाराष्ट्र में नोटों के आरोप से घिरे तावड़े अब उस उत्तर प्रदेश की चुनावी चौकी पर खड़े हैं जहां 2027 की लड़ाई में हर कदम पर विपक्ष की नजर होगी।

लेकिन यूपी की इस नई जिम्मेदारी के साथ उनके राजनीतिक सफर का एक ऐसा विवाद भी फिर चर्चा में है जिसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता मामला महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव 2024 का है। 19 नवंबर 2024 को मतदान से ठीक एक दिन पहले तावड़े उस समय विवादों में घिर गए थे जब बहुजन विकास आघाड़ी के कार्यकर्ताओं ने उन्हें विरार के एक होटल में घेर लिया। आरोप लगाया गया कि होटल में मतदाताओं को प्रभावित करने के लिए नकदी बांटी जा रही थी। तावड़े ने आरोपों को खारिज किया और निष्पक्ष जांच की मांग की थी।

करोड़ों पानी में बहे, सफाई व्यवस्था फिर भी बदहाल

» लखनऊ स्वच्छता अभियान कंपनी पर गंभीर सवाल

» सेकेंड्री कूड़े को प्राइमरी बताकर अधिक भुगतान कराने के आरोप

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क/मो. शारिक

लखनऊ। शहर की सफाई व्यवस्था को लेकर नगर निगम और निजी कंपनी लखनऊ स्वच्छता अभियान की कार्यप्रणाली पर गंभीर सवाल खड़े हो रहे हैं। आरोप है कि कंपनी द्वारा सेकेंड्री कूड़े के उठान से लेकर प्राइमरी कूड़े के नाम पर किए जा रहे कार्यों में ऐसी व्यवस्था अपनाई जा रही है, जिससे नगर निगम से करोड़ों रुपये का भुगतान कराया जा रहा है, जबकि कई इलाकों में जमीनी स्तर पर सफाई व्यवस्था बदहाल नजर आ रही है।

बताया जा रहा है कि सेकेंड्री कूड़ा उठाने के लिए करीब 500 रुपये प्रति टन, जबकि प्राइमरी कूड़े से संबंधित कार्य के लिए करीब 3000 रुपये प्रति टन की दर से भुगतान का प्रावधान है। ऐसे में कूड़े की वास्तविक मात्रा, उसके स्रोत और उसे किस श्रेणी में दर्ज किया गया, इसका सत्यापन बेहद महत्वपूर्ण हो जाता है। खरगापुर-सरसवां वार्ड में करीब 18 से 20 हजार हाउसहोल्ड बताए जा रहे हैं। आरोप है कि इस पूरे क्षेत्र में महज 15 वाहनों से कूड़ा उठान किया जा रहा है। एक वाहन से करीब 250 से 300 घरों से कूड़ा उठाने की बात सामने आ रही है। ऐसे में सवाल है कि इतने बड़े क्षेत्र के सभी घरों से नियमित कूड़ा उठाने का काम महज 15 वाहनों से किस प्रकार पूरा किया जा रहा है। नगर निगम यदि कंपनी को भुगतान कर रहा है तो प्रत्येक वाहन के जीपीएस रिकॉर्ड, प्रतिदिन के चक्कर, कूड़े की वास्तविक मात्रा और हाउसहोल्ड कवरेज का मिलान कराया जाना चाहिए। मामले में सबसे गंभीर आरोप यह है कि सेकेंड्री कूड़े को प्राइमरी कूड़े में बदलकर अधिक दर पर भुगतान कराने का खेल चल रहा है। आरोप सही पाए जाते हैं तो यह जांच का विषय होगा कि एक ही कूड़े को अलग-अलग श्रेणियों में दिखाकर नगर निगम से अधिक भुगतान तो नहीं कराया जा रहा। प्राइमरी और सेकेंड्री कूड़े की भुगतान दरों में अंतर होने के कारण कूड़े की श्रेणी, वजन पर्ची, वाहन रिकॉर्ड और बिलों का आपस में मिलान बेहद जरूरी है।

रोड स्वीपिंग में भी खेल के आरोप

सफाई व्यवस्था के तहत मुख्य मार्गों की रोड स्वीपिंग के लिए भी वाहन और मशीनरी लगाए जाने का दावा किया जा रहा है। लेकिन मुख्य मार्गों की वास्तविक स्थिति देखकर व्यवस्था पर सवाल खड़े हो रहे हैं। रोड स्वीपिंग का भुगतान नियमित रूप से किया जा रहा है तो मुख्य मार्गों पर गंदगी और धूल की स्थिति क्यों बनी हुई है। आखिर जिन सड़कों की सफाई के लिए भुगतान किया जा रहा है, वहां जमीनी स्तर पर उसका असर क्यों नहीं दिखाई दे रहा है?

काम कम, भुगतान ज्यादा होने का आरोप

कंपनी की कार्यप्रणाली को लेकर आरोप लगाया जा रहा है कि कई स्थानों पर काम अपेक्षित स्तर पर नहीं होने के बावजूद भुगतान किया जा रहा है। वहीं नगर निगम द्वारा कंपनी पर जुर्माना लगाए जाने की कार्रवाई भी सवालों के घेरे में है। आरोप है कि एक तरफ कंपनी को करोड़ों रुपये का भुगतान किया जा रहा है, दूसरी तरफ जुर्माना लगाकर कार्रवाई की औपचारिकता पूरी की जा रही है। ऐसे में सवाल है कि यदि कंपनी के काम में लगातार कमियां मिल रही हैं तो भुगतान की प्रक्रिया पर प्रभावी रोक या कठोर कार्रवाई क्यों नहीं की जा रही?

नगर निगम के खजाने पर असर

पूरे मामले में सबसे बड़ा सवाल नगर निगम के खजाने से होने वाले भुगतान को लेकर है। कंपनी द्वारा निर्धारित कार्य और वास्तविक कार्य में अंतर है, या कूड़े की श्रेणी बदलकर भुगतान का दावा किया जा रहा है, तो इसकी निष्पक्ष जांच जरूरी है। 15 वाहनों से वास्तव में कितना कूड़ा उठाया गया, कितने टन कूड़े का वजन हुआ, कितना कूड़ा सेकेंड्री था और कितना प्राइमरी के रूप में दर्ज किया गया–इन सभी आंकड़ों का मिलान होने पर ही भुगतान की वास्तविक तस्वीर सामने आ सकती है।

भरवारा वार्ड में भी उठे ऐसे ही सवाल

बताया जा रहा है कि भरवारा वार्ड में भी इसी तरह कंपनी की कार्यप्रणाली को लेकर सवाल उठ रहे हैं। आरोप है कि वहां भी सेकेंड्री कूड़े को प्राइमरी कूड़े में परिवर्तित कर नगर निगम से भुगतान कराया जा रहा है। खरगापुर-सरसवां और भरवारा दोनों क्षेत्रों में ऐसी शिकायतें सामने आ रही हैं तो नगर निगम को कंपनी के पिछले भुगतान की विस्तृत जांच करानी चाहिए।

नगर आयुक्त से उच्चस्तरीय जांच की मांग

मामले में मांग उठ रही है कि खरगापुर-सरसवां और भरवारा वार्ड में कंपनी द्वारा किए जा रहे कार्यों तथा पिछले भुगतानों की उच्चस्तरीय जांच कराई जाए। साथ ही कंपनी के वाहनों के जीपीएस रिकॉर्ड, हाउसहोल्ड कवरेज, वजन पर्चियां, कूड़े की श्रेणी, रोड स्वीपिंग का रिकॉर्ड, बिल और अधिकारियों की सत्यापन रिपोर्ट की जांच की जाए। यदि जांच में अनियमितता सामने आती है तो संबंधित कंपनी के साथ-साथ जिम्मेदार अधिकारियों की जवाबदेही भी तय की जानी चाहिए।

पॉश हास्पिटल हेल्थ सिटी का काला कारनामा

परेशानी थी बाएं पैर में सर्जरी कर दी दाएं पैर की

» कर डाला महिला के गलत पैर का आपरेशन

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। जिस पैर का दर्द था उसका इलाज करने गए थे लेकिन डॉक्टरों ने दूसरा पैर ही काट छांट डाला। लखनऊ के हेल्थ सिटी अस्पताल पर महिला का गंभीर आरोप 70,400 रुपये वसूले, ऑपरेशन से पहले बताने के बावजूद गलत पैर में कर दी सर्जरी।

अस्पताल मरीज के लिए वह जगह होती है जहां वह अपना शरीर अपना भरोसा और कई बार अपनी पूरी जिंदगी डॉक्टरों के हाथ में सौंप देता है। लेकिन अगर उसी अस्पताल के ऑपरेशन थिएटर में मरीज जिस पैर का इलाज कराने पहुंचा हो उसके बजाय दूसरे पैर का ऑपरेशन कर दिया जाए तो सवाल सिर्फ लापरवाही का नहीं रह जाता सवाल उस भरोसे का हो जाता है जिसके सहारे मरीज अस्पताल की चौखट पार करता है। लखनऊ के हेल्थ सिटी अस्पताल को लेकर सामने आयी एक महिला की शिकायत ने इसी भरोसे को झकझोर दिया है। महिला का आरोप है कि वह बाएं पैर का इलाज कराने अस्पताल पहुंची थी लेकिन ऑपरेशन के दौरान उसके दाहिने पैर की सर्जरी कर दी गई। महिला के मुताबिक अस्पताल में इलाज के नाम पर उससे 70 हजार 400 रुपये वसूले गए। सबसे चौंकाने वाली बात महिला के बयान का वह हिस्सा है जिसमें उसका कहना है कि ऑपरेशन थिएटर में ले जाने से पहले ही उसने डॉक्टर को बता दिया था कि समस्या बाएं पैर में है। इसके बावजूद वही पैर ऑपरेशन के लिए चुना गया जिसमें उसे समस्या ही नहीं थी। उसे बेहोशी का इंजेक्शन दिया गया। ऑपरेशन शुरू हुआ। लेकिन जब वह होश में आई तो उसे पता चला कि जिस पैर में समस्या नहीं थी उसी पैर में ऑपरेशन कर दिया गया है। महिला ने इसके बाद अस्पताल में हंगामा किया। उसका आरोप है कि जब उसने डॉक्टर से सवाल किया तो डॉक्टर ने उसके साथ बदसलूकी की। मामला सिर्फ अस्पताल की चारदीवारी के भीतर का नहीं है। पूरा मामला एक महिला के शरीर का है। एक ऐसा पैर है जिसका इलाज होना था एक दूसरा पैर है जिस पर अनावश्यक सर्जरी कर दी गयी और एक परिवार है जो इलाज के लिए अस्पताल गया था। महिला के मुताबिक उसने इलाज के लिए 70,400 रुपये दिए। यानी मरीज ने सिर्फ दर्द और बीमारी नहीं सौंपी थी उसने अपने पैसे और भरोसे के साथ खुद को डॉक्टरों के हवाले किया था। अब सबसे बड़ा सवाल है कि इसकी जिम्मेदारी कौन लेगा।

70,400

रुपये हास्पिटल ने वसूले गलती समाने आने के बाद महिला का किया गया उत्पीड़न

मोहाली में ईडी की रेड पर आग बबूला हुई आप

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मोहाली। मोहाली में गमाडा कार्यालय में लगातार तीसरे दिन चल रही प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की कार्रवाई को लेकर आम आदमी पार्टी के कार्यकर्ताओं ने वीरवार को जमकर हंगामा किया। बड़ी संख्या में आप कार्यकर्ता गमाडा कार्यालय के बाहर पहुंचे और ईडी की कार्रवाई के विरोध में रोष प्रदर्शन किया।

प्रदर्शन के दौरान कार्यकर्ताओं ने पुलिस बैरिकेड तोड़ दिए और गमाडा परिसर में दाखिल हो गए। इस दौरान पुलिस और प्रदर्शनकारियों के बीच धक्कामुक्की भी हुई।आप कार्यकर्ताओं ने गमाडा कार्यालय के अंदर पहुंचकर ईडी टीम तक जाने की कोशिश की, लेकिन वहां तैनात सीआरपीएफ जवानों ने उन्हें रोक दिया। इसके बाद प्रदर्शनकारी और आक्रामक हो गए। आरोप है कि कुछ कार्यकर्ताओं ने गमाडा कार्यालय की खिड़कियों पर पत्थर मारे, जिससे कई शीशे टूट गए।

राहुल गांधी ने साहिल वाकोडे के माता-पिता से की बात

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। लोकसभा में विपक्ष के नेता और कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने आईआईटी बॉम्बे के दिवंगत छात्र साहिल वाकोडे के माता-पिता से बात की और उन्हें अपने बेटे के लिए न्याय की लड़ाई में हर संभव मदद का भरोसा दिलाया।

सूत्रों ने बताया कि राहुल गांधी ने रवींद्र और सोनाली वाकोडे से तब वीडियो कॉल पर बात की जब वे वाशिम जिले से मुंबई जा रहे थे। लगभग 17 मिनट की इस बातचीत के दौरान राहुल ने दंपति से कहा कि वह उनके साथ हैं और उन्हें हर तरह की मदद का भरोसा दिलाया। कॉल के दौरान साहिल के माता-पिता के साथ इंडियन यूथ कांग्रेस के अध्यक्ष उदय भानु चिब और महाराष्ट्र यूनिट के प्रमुख शिवराज मोरे भी मौजूद थे। यह बातचीत साहिल की मौत की स्वतंत्र जांच की बढ़ती मांगों और विरोध प्रदर्शनों के बीच हुई है। उनके माता-पिता ने आरोप लगाया है कि उनके बेटे को आईआईटी बॉम्बे में जाति-आधारित भेदभाव और मानसिक उत्पीड़न का सामना करना पड़ा था और उन्होंने इसके लिए जिम्मेदार लोगों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है।

महाराष्ट्र कार्यालय :- 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क, 2-डी सिटी मॉल, अंधेरी वेस्ट, मुंबई, महाराष्ट्र - 400053। विधि सलाहकार : मोहम्मद हैदर
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी।
RNI-UPHIN/2015/62233, दूरभाष : 0522- 4078371 । Email : daily4pm@gmail.com । website: www.4pm.co.in ।
समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए
मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा
द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित
पता 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। संपादक- संजय शर्मा